आधारशिला
क्रियान्वयन संदर्शिका

कक्षा–1 (भाषा)

2020–2021

समग्र शिक्षा, उ.प्र.

संरक्षण	:	**श्रीमती रेणुका कुमार,** आई.ए.एस अपर मुख्य सचिव (बेसिक शिक्षा) उ.प्र. शासन, लखनऊ
निर्देशन		**श्री विजय किरन आनन्द,** आई.ए.एस महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र.
संकल्पना एवं मार्गदर्शन	:	**श्री सत्येन्द्र कुमार,** आई.ए.एस. अपर राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र. **श्री सर्वेन्द्र विक्रम सिंह** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ
समन्वयन	:	**श्री आनन्द पाण्डेय,** वरिष्ठ विशेषज्ञ एवं प्रभारी, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा **श्रीमती शिखा शुक्ला,** विशेषज्ञ, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा **श्री पी. एम. अन्सारी,** राज्य सलाहकार, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा
परामर्श	:	**श्री अजय कुमार सिंह,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ **श्रीमती दीपा तिवारी,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ
समीक्षा एवं संपादन	:	**श्री पी. एम. अन्सारी,** राज्य सलाहकार, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा **श्री रमेश चंद्र,** लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली
लेखन मंडल	:	डॉ दिलीप कुमार तिवारी (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय जुगराजपुर, कौशाम्बी, एवं SRG कौशाम्बी जनपद), कृष्ण मुरारी उपाध्याय (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय पठा, महरौनी, ललितपुर) योगेन्द्र सिंह (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय सलारपुर, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर), रागिनी गुप्ता (प्रधानाध्यापिका, अभिनव प्रा0वि0 ककोरगहना, जौनपुर), सुशील कुमार उपाध्याय (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय चांदपुर, सिकरारा, जौनपुर एवं ARP जनपद जौनपुर) वन्दना गुप्ता (सहायक अध्यापिका, पूर्व माध्यमिक विद्यालय मल्हौर, चिनहट, लखनऊ) श्रीप्रकाश सिंह (प्रधानाध्यापक, आदर्श प्राथमिक विद्यालय, मड़ियाहूँ प्रथम, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर) जय शेखर (सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय धुसाह 1, बलरामपुर), जय प्रकाश सिंह (सहायक अध्यापक, पू.मा.वि खरगापुर, डीघ, भदोही) गजेन्द्र कुमार (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय पूरेशम्भू, औराई, भदोही एवं ARP), सुप्रिया घोष (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली) सहदेव पंवार (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली) विशाल कश्यप (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, उत्तर प्रदेश)
ले–आउट एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन	:	स्टेला डिज़ाइन एण्ड प्रिंट, न्यू दिल्ली

आभार: इस पुस्तक के निर्माण में कई स्रोतों से सामग्रियों का उपयोग किया गया है, इसके लिए हम सभी के आभारी हैं।

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा 'मिशन प्रेरणा' के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु 'आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका' का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्राथमिक शिक्षा बच्चों को आदर्श संस्कार प्रदान करते हुए उन्हें सभी प्रकार से योग्य व सक्षम बनाने का प्रथम सोपान है। बच्चे अपने सपनों को साकार कर सकें, इसके लिए आवश्यक है कि उनमें सृजनात्मकता, वैज्ञानिक चिंतन, जीवन मूल्य के तत्व तथा स्वयं को व्यक्त करने की क्षमता विकसित की जाए। इस कार्य में प्राथमिक शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

शिक्षा को रुचिकर, आनन्दमय, जीवन्त और अपेक्षित ज्ञान व कौशलों से परिपूर्ण बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस कार्य में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। 'मिशन प्रेरणा' के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु 'आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका' का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। मुझे अवगत कराया गया है कि संदर्शिका में समय–सारिणी, प्रेरणा सूची, प्रेरणा लक्ष्य, लर्निंग आउटकम का विभाजन, भाषा एवं गणित की संकल्पना, समझ, पहचान तथा आकलन, कक्षा प्रबन्धन गतिविधियों आदि का समावेश किया गया है। मुझे आशा है कि यह संदर्शिका सभी शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

'आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका' के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

दूरभाष : 0522-2236181/2239296 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

डॉ सतीश चन्द्र द्विवेदी

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
बेसिक शिक्षा, उ०प्र० सरकार

संदेश

"निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम–2009" के अन्तर्गत 6 से 14 वयवर्ग के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराना उत्तर प्रदेश शासन की संवैधानिक प्रतिबद्धता है। इसी पृष्ठभूमि में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप प्रदान करने के लिये **"मिशन प्रेरणा"** लागू किया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 में फाउण्डेशनल लिटरेसी एण्ड न्यूमरेसी पर विशेष ध्यान केन्द्रित किये जाने के दृष्टिगत कक्षा 1–5 के बच्चों में गणित एवं भाषा में अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति हेतु कार्ययोजना बनाते हुए **'मिशन प्रेरणा'** के लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं। उक्त लक्ष्यों को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों के उपयोगार्थ तीन हस्तपुस्तिकायें –**'आधारशिला', 'शिक्षण संग्रह'** एवं **'ध्यानाकर्षण'** विकसित की गयी हैं। इन हस्तपुस्तिकाओं में पाठ्य पुस्तकों में निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ाने का तरीका और कक्षा–कक्ष वातावरण को विस्तार से स्पष्ट किया गया है।

प्रारम्भिक स्तर पर कक्षा 1 व 2 में भाषा व गणित विषयों को रोचक तरीकों व गतिविधियों से शिक्षण कराने तथा इन विषयों पर बच्चों की समझ का विकास कर मजबूत आधारशिला रखे जाने के उद्देश्य से **"आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका"** विकसित की गयी है। संदर्शिका में वर्णित रूचिपूर्ण एवं आकर्षक सामग्री व तकनीक बच्चों को सीखने के लिये उपयोगी सिद्ध होगी, जिससे वे मुख्यधारा में सम्मिलित होकर मासिक पाठ्यक्रम एवं उपलब्धि संकेतकों के अनुसार ज्ञानार्जन कर सकेंगे। इससे कक्षा के वातावरण को अधिगमपूर्ण एवं आनन्ददायक बनाने तथा शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन में बल मिलेगा। इसी आशा एवं विश्वास के साथ सभी शिक्षकों/शिक्षिकाओं के प्रति अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

डॉ0. सतीश चन्द्र द्विवेदी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

रेणुका कुमार
आई०ए०एस०,
अपर मुख्य सचिव,
राजस्व एवं बेसिक शिक्षा विभाग,
उ०प्र० शासन

संदेश

प्राचीन काल से शिक्षा भविष्य के समाज की धरोहर के रूप में जानी जाती है। भविष्य के समाज के विकास को ध्यान में रखकर वर्तमान में शिक्षा पर निवेश किया जाता है। शिक्षक समाज में परिवर्तन के सच्चे संवाहक तथा बच्चों की अमूर्त आकांक्षाओं को मूर्त रूप दे सकते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप देने हेतु **'मिशन प्रेरणा'** लागू किया गया है। विद्यालयों में अवस्थापनाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु 'ऑपरेशन कायाकल्प' संचालित किया जा रहा है, जिसके माध्यम से मूलभूत सुविधाओं का संतृप्तीकरण किया जा रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु फाउण्डेशनल लर्निंग पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। प्रेरणा लक्ष्यों की प्राप्ति के उद्देश्य से शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन हेतु तीन मॉडयूल्स (''आधारशिला'', ''शिक्षण संग्रह'' एवं ''ध्यानाकर्षण'') विकसित किये गये हैं जिन्हें प्रत्येक शिक्षक को उपलब्ध कराया जा रहा है।

उक्त श्रृंखला में नव विकसित **''आधारशिला कियान्वयन संदर्शिका''** के द्वारा **''मिशन प्रेरणा''** के अन्तर्गत सभी बच्चों को सीखने के लिए रूचिपूर्ण एवं आकर्षक सामग्री व प्रभावकारी तकनीक सभी शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और वे कक्षा के वातावरण को अधिगमपूर्ण एवं आनन्ददायक बनाने में सफल होंगे। इसी आशा एवं विश्वास के साथ सभी शिक्षकों/शिक्षिकाओं के प्रति अपनी शुभकामनाएं देती हूँ।

(रेणुका कुमार)
अपर मुख्य सचिव

विषय सूची

पाठ	विषय	पृष्ठ
1	प्रेरणा सूची – हिंदी (कक्षा 1)	1
2	'मिशन प्रेरणा' का संक्षिप्त परिचय एवं आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका का उपयोग	2
	भाग–1 : सैद्धांतिक समझ	
3	कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया और शिक्षक की भूमिका	6
4	प्रारंभिक कक्षाओं में साक्षरता	8
5	पढ़कर समझने की प्रक्रिया	9
6	प्रारंभिक कक्षाओं में मौखिक भाषा विकास	11
	भाग–2 : कक्षा–1 में भाषा शिक्षण के अकादमिक सत्र की रूपरेखा, कार्य योजना एवं गतिविधियाँ	
7	अकादमिक सत्र 2020–2021 में कक्षा–1 में भाषा शिक्षण पर कार्य	14
8	दैनिक स्तर पर भाषा के तीनों कालांशों में शिक्षण कार्य	16
9	सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना	17
10	सहायक शिक्षण सामग्री एवं प्रेरणा सूची की दक्षताएँ	21
11	सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य करने की सामान्य रूपरेखा	22
12	प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्यः सप्ताह 1 से 10	23
13	प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री 'सहज–1' पर कार्यः सप्ताह 11–16	25
14	प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री से संबंधित गतिविधियों का विस्तृत विवरणः सप्ताह 1–10	26

विषय सूची

पाठ	विषय	पृष्ठ
15	प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री की गतिविधियों की साप्ताहिक कार्य योजनाः सप्ताह 1–10	36
16	प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री पर आधारित दैनिक कार्य योजना का एक नमूनाः सप्ताह 1–10	37
17	प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री से संबंधित गतिविधियों का विस्तृत विवरणः सप्ताह 11–16	39
18	प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री की गतिविधियों की साप्ताहिक योजना एवं दैनिक कार्य योजना का नमूना : सप्ताह 11–16	42
19	कलरव–1 एवं प्रेरणा सूची की दक्षताएँ	43
20	द्वितीय कालांश में कलरव–1 के पाठों पर कैसे कार्य करें?	44
21	भाषा शिक्षण से संबंधित कुछ प्रमुख बातें	49
22	आकलन एवं पुनरावृत्ति	50
	भाग–3 : कक्षा–कक्ष से संबंधित महत्वपूर्ण पहलू	
23	कक्षा प्रबंधन	56
24	कक्षा में प्रिंट रिच (प्रिंट समृद्ध) वातावरण	59
	भाग–4 : मौखिक भाषा विकास से संबंधित गतिविधियों का संकलन	
25	कविता, कहानी और मौखिक खेल गतिविधियों का संकलन	62
	• कविताएँ	62
	• कहानियाँ	66
	• मौखिक खेल गतिविधियाँ	69

1. प्रेरणा सूची – हिंदी (कक्षा 1)

विषय	LO Code	दक्षताएँ
सुनकर समझना और प्रतिक्रिया देना	H101	ग्रेड 1 के स्तर की कहानियों और कविताओं का आदर्श वाचन होते हुए सुनकर समझ लेता/लेती है।
	H102	ग्रेड 1 के स्तर का पाठ सुनकर घटनाओं और पात्रों के बारे में प्रत्यक्ष तौर पर स्मृति आधारित प्रश्नों के जवाब दे सकता/सकती है।
मौखिक शब्दावली	H103	रोजमर्रा के परिवेश में सुने जाने वाले सरल क्रिया शब्दों, चीज़ों/जानवरों के नाम बता सकता/सकती है (परिचित चित्र पहचान संज्ञाएँ व क्रिया शब्द)।
मौखिक अभिव्यक्ति व वर्णन	H104	खुद के बारे में व साधारण स्थितियों के बारे में घर की भाषा में बात करते हैं।
	H105	वस्तुओं का वर्णन करते हैं किसी चित्र के बारे में कुछ वाक्य अपनी भाषा में बोल सकता/सकती है।
प्रथम ध्वनि पहचान	H106	परिचित शब्दों की प्रथम ध्वनि (इकाई ध्वनि) को पहचान कर सकता/सकती है।
वर्ण पहचान	H107	ग्रेड 1 के पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी वर्णों और अक्षरों को पहचान लेता/लेती है।
शब्द पहचान/पढ़ना	H108	ग्रेड 1 में सिखाये गए वर्णों और अक्षरों (3 तक वर्ण या अक्षरों से बने) से बने परिचित शब्दों को उचित गति और शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।
	H109	ग्रेड 1 में सिखाये गए वर्णों और अक्षरों (3 तक वर्ण या अक्षरों से बने) से बने अपरिचित शब्दों को उचित गति और शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।
मौखिक पठन प्रवाह	H110	4–5 वाक्यों के एक सरल पाठ्यांश को शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।
पढ़कर समझना	H111	ग्रेड 1 के स्तर के पाठ को समझते हुए पढ़ सकता/सकती है।
	H112	पाठ में से स्पष्ट दिखने वाली जानकारी को निकाल या बता सकता/सकती है (जैसे, इस तरह के प्रश्नों के जवाब– 'लड़की का नाम क्या है?' जबकि पाठ में लिखा हो, 'लड़की का नाम शांति है)
लेखन	H113	सरल परिचित शब्द लिख लेता/लेती है – जिनमें 2–3 अक्षर हों।
	H114	चित्र/पाठ/घटना का विवरण देने के लिए शब्द लिख सकता/सकती है।

2. 'मिशन प्रेरणा' का संक्षिप्त परिचय एवं आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका का उपयोग

'मिशन प्रेरणा' के तहत प्राथमिक कक्षाओं में सुनियोजित तरीके से कार्य करने की आवश्यकता एवं स्कूल की भूमिका

हम सभी जानते हैं कि राज्य भर में बेसिक शिक्षा विभाग के तहत 1.6 लाख स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए 'मिशन प्रेरणा' उत्तर प्रदेश सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्राथमिक कक्षाओं में भाषा एवं गणित के बुनियादी अधिगम कौशलों पर विशेष एवं व्यवस्थित रूप से कार्य करना है। भाषा के परिपेक्ष्य में शैक्षिक वर्ष 2020–2021 में, कक्षा–1 में बच्चों की मौखिक भाषा के विकास एवं उससे संबंधित लेखन कार्य और समझ के साथ पढ़ने पर एक व्यवस्थित रणनीति के तहत कार्य किया जाना है। ऐसा इसलिए क्योंकि प्रारंभिक स्तर पर इन दोनों कौशलों पर कार्य करना अत्यंत ज़रूरी होता है और अगर इन पर सुनियोजित तरीके से कार्य न किया जाए तो आगे चलकर बच्चों की 'सीखने की प्रक्रिया' बाधित होती है और बच्चे आगामी कक्षाओं में निर्धारित किए गए अधिगम लक्ष्य को हासिल करने में पीछे छूट जाते हैं।

ऊपर उल्लिखित उद्देश्य को हासिल करने के लिए इस कार्यक्रम में दक्षताओं की एक सूची 'प्रेरणा सूची' तैयार की गई है। इस सूची में भाषा से संबंधित 9 कौशलों की पहचान की गई है एवं इनसे जुड़ी हुई 14 दक्षताओं को आधार बनाकर शिक्षण कार्य की योजना बनाई है। इन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राज्य के प्रत्येक स्कूल एवं प्राथमिक कक्षाओं के स्कूल शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत एवं इसकी उपयोगिता

इस संदर्शिका के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि भाषा शिक्षण में शामिल विभिन्न गतिविधियों को क्यों व कैसे करवाया जाना ज़रूरी है। इस संदर्शिका को बनाने का एवं शिक्षकों के साथ साझा करने का मुख्य उद्देश्य सभी शिक्षकों को पूरे अकादमिक सत्र की परिकल्पना करने में मदद करना एवं प्रेरणा सूची में निर्धारित दक्षताओं को प्रत्येक बच्चे द्वारा हासिल करने में सहयोग करना है।

लेकिन, इन पर बात करने से पहले, इस संदर्शिका में हम कक्षा–1 में भाषा शिक्षण के महत्वपूर्ण पहलुओं (सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक) पर विस्तृत चर्चा करेंगे और फिर एक सुनियोजित कार्ययोजना को अपनाते हुए 'मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन कार्य' और 'समझ के साथ पढ़ने' की अलग–अलग गतिविधियों पर व्यवस्थित तरीके से कैसे कार्य किया जाना है, इस पर अपनी समझ बनाएँगे।

नोट : इस संदर्शिका में 'शिक्षक' शब्द का प्रयोग शिक्षक एवं शिक्षिका दोनों के लिए किया गया है।

इस संदर्शिका के 4 भाग हैं :

भाग 1 : सैद्धांतिक समझ
भाग 2 : कक्षा–1 में भाषा शिक्षण के अकादमिक सत्र की रूपरेखा, कार्ययोजना और गतिविधियाँ
भाग 3 : कक्षा–कक्ष से संबंधित महत्वपूर्ण पहलू
भाग 4 : मौखिक भाषा विकास से संबंधित गतिविधियों का संकलन

आइए, इन सभी भागों पर थोड़ी–थोड़ी चर्चा करते हैं।

भाग 1 : भाग–1 में हम 'बच्चों के सीखने' से संबंधित महत्वपूर्ण कारकों और सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका को समझेंगे। इसके साथ ही वर्तमान में 'साक्षरता' को कैसे परिभाषित किया जाता है और इस परिभाषा के संदर्भ में कक्षाओं में किस तरह का कार्य किया जाना अपेक्षित है, इस पर कुछ समय व्यतीत करेंगे। अपनी–अपनी कक्षाओं में हमने यह अवश्य देखा होगा कि जब बच्चे कक्षा–1 में दाखिला लेते हैं तो वे कुछ भी नहीं जानते, ऐसा नहीं होता है। अपने घर की भाषा पर उनकी पकड़ होती है। हम प्रायः जब बच्चों को 'वाचाल' कह कर संबोधित करते हैं तो दरअसल वे, मौखिक रूप से 'समझ' से संबंधित बहुत कार्य कर रहे होते हैं। जैसे– तर्क देना, अनुमान लगाना, तुलना करना आदि। लेकिन, ऐसा भी संभव है कि बच्चे स्कूल की मानक भाषा में यह कार्य न कर रहे हों; वे अपने घर की भाषा में चिंतन एवं अभिव्यक्ति करते होंगे। इसलिए बच्चों के घर की भाषा को स्कूल में लाने से एवं इसे एक संसाधन की तरह उपयोग करने से कक्षा–कक्ष की शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली होती है एवं बच्चों और शिक्षकों में अर्थपूर्ण संवाद होता हुआ दिखता है। बच्चों के घर की भाषा एवं उनके मौखिक भाषा विकास पर भी हम इस संदर्शिका में बातचीत करेंगे।

इस भाग में हम, डिकोडिंग अर्थात शब्द पहचान पर भी थोड़ी चर्चा करेंगे। अभी भी बहुत सारी कक्षाओं में जिस तरह से डिकोडिंग पर कार्य किया जाता है, वह शायद बहुत सारे बच्चों को प्रवाहपूर्ण पठन की ओर कक्षा–1 से ही न बढ़ा पाए। ऐसे में व्यवस्थित तरीके से डिकोडिंग पर कार्य करना बच्चों के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। व्यवस्थित डिकोडिंग या शब्द पहचान क्या होता है, इसे कैसे कराया जाना चाहिए एवं क्यों, हम इस पर भी अपनी समझ बनाएँगे। हम शुरुआत से कहते चले आ रहे हैं कि 'समझ के साथ पढ़ना' बच्चों के लिए बेहद ज़रूरी है, पर क्यों और इसे बढ़ावा देने के लिए क्या किया जाना चाहिए, यह संदर्शिका इस पर भी प्रकाश डालती है।

भाग 2 : इस संदर्शिका के भाग–2 में, इस वर्ष भाषा शिक्षण में कैसे कार्य किया जाना प्रस्तावित है, इस पर विस्तार से बात करेंगे। इस अकादमिक सत्र में प्रेरणा सूची में दी गई दक्षताओं पर कार्य करने के लिए हम पाठ्यपुस्तक– 'कलरव–1', कार्य पुस्तिका–1 के साथ–साथ कुछ सहायक शिक्षण सामग्री पर व्यवस्थित रूप से कार्य करेंगे। पाठ्यपुस्तक के सभी पाठों एवं सहायक शिक्षण सामग्री के माध्यम से कराई जाने वाली गतिविधियों को प्रेरणा सूची से संबंधित दक्षताओं के साथ रखकर इस संदर्शिका में दिया गया है। इससे शिक्षकों को यह निरंतर रूप से पता चलता रहेगा कि प्रतिदिन एवं भाषा कालांशों की प्रत्येक

गतिविधि में प्रेरणा सूची की किन–किन दक्षताओं पर कार्य किया जा रहा है। इसके साथ ही इन कालांशों में विभिन्न गतिविधियों पर कैसे कार्य करना है, इन गतिविधियों को कक्षा में क्रियान्वित करने के चरण क्या हैं, कक्षा में इन पर कार्य करने के दौरान किन–किन बातों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है, इन पहलुओं पर बातचीत की गई है।

इसके अलावा इस संदर्शिका में पूरे वर्ष की सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना एवं दैनिक कार्य योजना के नमूने दिए गए हैं। इस भाग में प्रेरणा सूची की दक्षताओं एवं विभिन्न गतिविधियों का आकलन एवं पुनरावृत्ति की योजना स्कूल/कक्षा के स्तर पर कैसे की जानी चाहिए एवं इसकी क्या उपयोगिता है, इस विषय को शिक्षकों के समक्ष विस्तार से रखा गया है। इस भाग में दिए गए सभी पहलुओं के माध्यम से शिक्षकों को कक्षा–1 में भाषा पर कार्य करने का ख़ाका (ब्लू प्रिंट) मिल जाएगा जो उन्हें कक्षा में सहजता से कार्य करने में मदद करेगा।

भाग 3 : शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन एवं कक्षा में उपलब्ध प्रिंट सामग्रियाँ बच्चों के 'सीखने' में बहुत सहयोग करती हैं और सीखने की प्रक्रिया को एक वांछित गति प्रदान करती हैं। इसलिए इन्हें गंभीरता से लेना आवश्यक है। इस भाग में इन दोनों विषयों पर विस्तृत बातचीत की गई है। शिक्षकों को भाग 3 में दिए गए दिशानिर्देशों को ध्यान में रखकर कक्षा को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने में मदद मिलेगी।

भाग 4 : अंतिम भाग में कुछ मौखिक खेल गतिविधियाँ दी गई हैं। इन गतिविधियों को आधार बनाकर शिक्षक अन्य मौखिक खेल गतिविधियाँ बना सकते हैं जो बच्चों के मौखिक भाषा विकास के लिए उपयोगी होती हैं एवं बच्चों को इनको करने में बहुत आनंद भी आता है। इसके साथ ही, कुछ कविताओं एवं कहानियों का संकलन भी इस भाग में दिया गया है।

इस संदर्शिका में कुछ बातें आपकी नज़रों के सामने से बार–बार गुज़रेंगी। जैसे– बच्चों के घर की भाषा को कक्षा में स्थान देना, प्रत्येक बच्चे को कक्षा में हो रही शिक्षण प्रक्रिया में जुड़ने का अवसर मिलना, बच्चों को बातचीत एवं चर्चा में हिस्सा लेने के ज़्यादा से ज़्यादा मौके, भयरहित वातावरण, बच्चों द्वारा जोड़ों एवं समूह में कार्य, नियमित एवं पर्याप्त पठन अभ्यास के मौके, अभिव्यक्ति से जुड़े अर्थपूर्ण लेखन कार्य, शिक्षकों द्वारा व्यवस्थित तरीके से गतिविधियों पर कार्य करना एवं कक्षा में आने के पूर्व की तैयारी आदि। हम सभी शिक्षकों को इन बातों का ख़्याल हमेशा रखना चाहिए एवं एक 'चिंतनशील शिक्षक' (reflective teacher practitioner) की भूमिका को अपनाते हुए कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाना चाहिए तथा बच्चों को सीखने के सक्रिय एवं सार्थक मौके प्रदान करने चाहिए। साथ ही, संवेदनशीलता के साथ बच्चों को अपने तत्कालीन अधिगम स्तर से अगले स्तर पर जाने के लिए प्रोत्साहित करना, उचित मार्गदर्शन और ज़रूरी अवसर देना भी हम शिक्षकों का कर्तव्य है।

हम आशा करते हैं कि अकादमिक सत्र 2020–2021। सभी शिक्षकों एवं बच्चों के लिए एक अनोखा अनुभव रहेगा और हम सब मिलकर 'मिशन प्रेरणा' के उद्देश्य एवं लक्ष्य को अवश्य ही हासिल करेंगे।

भाग 1

सैद्धांतिक समझ

3. कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया और शिक्षक की भूमिका

सीखना एक सतत प्रक्रिया है जिसमें हम नए ज्ञान, व्यवहार और कौशल अर्जित करते हैं तथा पहले अर्जित किए गए ज्ञान, व्यवहार और कौशल में नए एवं विभिन्न अनुभवों के आधार पर संशोधन करते हैं। हम सभी, बड़े या बच्चे, सीखने की इसी प्रक्रिया से हमेशा गुजरते रहते हैं। बच्चों का सामाजिक परिवेश उनके सीखने की प्रक्रिया को बहुत प्रभावित करता है। अगर बच्चों को सकारात्मक एवं प्रोत्साहन करने वाला सामाजिक परिवेश मिलता है तो उनके लिए सीखना एक सहज, स्वाभाविक, अर्थपूर्ण एवं आनंददायी अनुभव होता है। यूरी ब्रोंफेनब्रेनर, एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने बच्चों के विकास की प्रक्रिया को उनके एवं उनके सामाजिक परिवेश के बीच हो रहे पारस्परिक अंतःक्रिया के रूप में समझा। उन्होंने अपने 'इकोलॉजीकल सिस्टम सिद्धांत' (ecological system theory) में यह कहा है कि सामाजिक रिश्ते एवं बच्चों के आस–पास की दुनिया उनके विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अतः सीखने की प्रक्रिया में घर–परिवार, शिक्षक एवं स्कूल समुदाय, समाज एवं संस्कृति, आदि– इन सभी का बड़ा योगदान होता है।

स्कूल समुदाय के प्रसंग में बच्चों के लिए भयरहित वातावरण, शिक्षक का बच्चों के साथ जुड़ाव, कक्षा में हो रही गतिविधियों में हिस्सा लेने के पर्याप्त मौके मिलना, सीखने के लिए आवश्यक है। वहीं, ऐसी कक्षाएँ बच्चों के सीखने में कोई योगदान नहीं दे पाती जहाँ बच्चों में एक डर का माहौल होता है। शिक्षक बच्चों के मनोभाव को नहीं समझ पाते हैं एवं ऐसी गतिविधियाँ जिसमें बच्चे शिक्षक के पीछे–पीछे दुहराने का कार्य कर रहे होते हैं, बोर्ड या किताब से नकल कर अपनी कॉपी में लिखते हैं, केवल शिक्षक की बातों को सुनते हुए हाँ या ना में जवाब देते हैं।

कक्षा–कक्ष में सीखने की प्रक्रिया

स्कूल में दाखिला लेने के बाद से ही हमारी कक्षाओं में बच्चों को सीखने के व्यवस्थित तरीके से जोड़ने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। परंतु ऐसा भी नहीं है कि जो बच्चे/वयस्क स्कूल या अन्य शिक्षण संस्थानों में नहीं जाते, वे नहीं सीखते हैं। वे शायद व्यवस्थित तरीके से साक्षरता ग्रहण करने में पीछे छूट जाएँ, लेकिन वे अपने पर्यावरण से अन्य चीज़ें अवश्य सीखते हैं। ऐसा अक्सर देखा गया है कि स्कूल में दाखिल होने के बाद बहुत–से बच्चे विभिन्न कारणों से भय महसूस करते हैं और उनके आत्मविश्वास में भी कमी होती है। वे उस तरह नहीं सीख पाते, जिस तरह हम उन्हें सिखाना चाहते हैं। इस वजह से वे सहज नहीं हो पाते हैं और कक्षा में हो रही गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले पाते। आम तौर पर यह देखा गया है कि इन्हें आवश्यकतानुसार मदद नहीं मिल पाती है।

सीखने–सिखाने के कुछ सामान्य सिद्धांत

सीखने–सिखाने के कुछ सामान्य सिद्धांत हैं जो कक्षा में बच्चों के 'सीखने' में प्रभावी रहे हैं। शिक्षक कक्षा में इन सिद्धांतों को अपनाकर कक्षा–प्रक्रिया को सक्रिय और बेहतर बना सकते हैं:

- कक्षा को बच्चों की दुनिया से जोड़ना
- बच्चे के पूर्वज्ञान व अनुभव का इस्तेमाल करना
- बच्चों को अपने सहपाठियों के साथ/से सीखने के अवसर देना
- सीखने में बच्चे की मदद करना
- कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाना
- सीखने की प्रक्रिया में सभी बच्चों का जुड़ाव सुनिश्चित करना
- सोचने की प्रक्रिया के लिए मौके और प्रोत्साहन देना
- समृद्ध एवं विस्तृत बातचीत के अवसर देना
- सतत आकलन कर सीखने–सिखाने को सुदृढ़ करना

नोटः इस संदर्शिका में विभिन्न जगहों पर इन सामान्य सिद्धांतों पर चर्चा की गई है जिससे आपको यह पता चल सके कि इन पर कैसे कार्य किया जाना चाहिए।

4. प्रारंभिक कक्षाओं में साक्षरता

हम बहुत सालों तक उन्हें, ही साक्षर मानते थे जो अक्षर या शब्द पढ़ और लिख सकते थे। परंतु, समय के साथ साक्षरता की इस परिभाषा में बदलाव हुआ है। साक्षरता की तत्कालीन एवं व्यापक परिभाषा के अनुसार– *वह व्यक्ति साक्षर है जो लगातार सीखने के लिए लिखित सामग्री का इस्तेमाल करके अपने उद्देश्यों को पूरा कर सकता है और अपने ज्ञान और सामर्थ्य को बढ़ाता है।* इसके साथ ही, वह अपने समुदाय और व्यापक समाज में भागीदारी के लिए लिखने–पढ़ने का उपयोग करता है। अतः साक्षरता सोचने, सीखने, सशक्तिकरण और समाज में योगदान देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। यह मनुष्य को आत्मनिर्भर भी बनाती है क्योंकि वह निरंतर पढ़ने, लिखने एवं उच्चस्तरीय चिंतन कौशलों का उपयोग अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में प्रयोग करता है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि साक्षरता में दो चीज़ें शामिल हैं: **'शब्द को पढ़ना'** और **'दुनिया को पढ़ना'**।

शब्द को पढ़ने का अर्थ लिखित सामग्री को पढ़कर, उस पर अपनी समझ बनाना होता है और इस समझ के आधार पर हम समाज और लोगों को समझते हैं एवं अंतःक्रिया करते हैं अर्थात दुनिया को पढ़ते हैं।

उदाहरण– जब हम कोई कहानी पढ़ते हैं तब कहानी की घटनाओं को समझते हैं, पात्रों के मनोभाव को करीब से जान पाते हैं। भले ही कहानी काल्पनिक हो लेकिन बहुत बार हम इन घटनाओं एवं पात्रों के साथ एक निजी संबंध बना रहे होते हैं। इन्हें हम अपनी एवं दूसरों की जिंदगी से जोड़ते हुए मनुष्य एवं उनकी परिस्थितियों को बेहतर समझ पाते हैं।

अपनी इस भूमिका में साक्षरता इतनी महत्वपूर्ण है कि वह जीवन रूपांतरित कर सकती है।

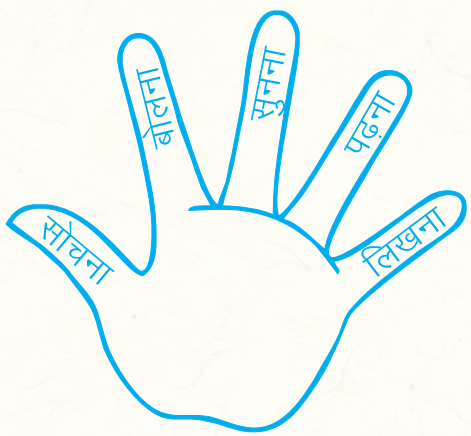

स्रोतः ऑर्गेनाइजेशन फॉर अर्ली लिट्रेसी प्रमोशन (ओईएलपी)

साक्षरता के आयाम

स्कूलों में साक्षरता विकास को सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशलों में विभाजित किया जाता है। लेकिन असल में, *सोचना, तर्क करना, विश्लेषण कर पाना* आदि, सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की सभी प्रक्रियाओं के अभिन्न अंग हैं।

पढ़ना और लिखना एक तरह से मौखिक भाषा के पहलू– **सुनकर समझने** और **बोलकर अपनी बात कहने**– का ही विस्तार हैं। किसी लिखित पाठ को समझने में मौखिक भाषा का ज्ञान आधार का काम करता है। किसी भाषा में अर्जित शब्दावली और दुनिया की समझ ही बच्चों को पढ़कर समझने में सक्षम बनाती हैं।

स्कूल में आने के पूर्व ही बच्चे मौखिक रूप से बहुत सारे चिंतन कौशल पर पकड़ बना चुके होते है, जैसे, अनुमान लगाना, तर्क देना, अपने अनुभव साझा करना, आदि। बच्चों की मौखिक भाषा की इस विशेषज्ञता को कक्षा में स्थान मिलना चाहिए एवं इसे संपदा के रूप में देखा जाना चाहिए।

5. पढ़कर समझने की प्रक्रिया

पढ़ना लिखित सामग्री से अर्थ निर्माण करने की प्रक्रिया है। किसी लिखित पाठ को बिना समझे उच्चारित करने के काम को डिकोडिंग (अक्षर और ध्वनि के संबंध के ज्ञान के आधार पर किसी शब्द को प्रिंट से ध्वनि में बदल कर उच्चारित करना) तो कहा जा सकता है, पर पढ़ना नहीं कहा जा सकता। पढ़ना कई कौशलों का समुच्चय है। इसकी तुलना हम किसी गीत संगीत की मंडली से कर सकते हैं, जिसमें लोग विविध वाद्य यंत्रों को इस सामंजस्य के साथ बजाते हैं कि उनसे निकली आवाज़ हमारे कानों को मधुर लगने लगती है। किसी आर्केस्ट्रा की तरह ही पढ़ने में भी कई कौशल शामिल होते हैं। इसमें वर्ण और ध्वनि के सहसंबंध को जानना, जल्दी से और सही डिकोडिंग करना, शब्दों के अर्थ को जानना, अपने पूर्व ज्ञान को इस्तेमाल करना अथवा अपने अनुभवों से जोड़ पाना, अनुमान लगाना, पाठ के अलग–अलग हिस्सों को आपस में जोड़ पाना, निष्कर्ष निकालना आदि बातें शामिल हैं। हम उपर्युक्त बात को सरल समीकरण के रूप में इस तरह रख सकते हैं–

शब्द पहचान X **भाषा के विभिन्न पहलुओं की समझ** → **समझ के साथ पढ़ना**

ऊपर दी गई आकृति को 'सिम्पल व्यू ऑफ रीडिंग' (Simple View of Reading) कहा जाता है। इसके अनुसार किसी पाठ को पढ़कर समझने के लिए शब्द पठन और समझ दोनों समृद्ध होने चाहिए।

जब भी हम ***'पढ़ना'*** कहते हैं तो इसका आशय पढ़कर समझने से है। हमने इससे पहले पढ़ने में शामिल कौशलों का उल्लेख किया है। पढ़ते समय ये सभी कौशल सक्रिय रहते हैं, इसी से पढ़कर अर्थ ग्रहण करना संभव होता है।

पढ़कर समझने के कौशल की बुनियाद ***'सुनकर समझना'*** है। कक्षा में समृद्ध मौखिक वातावरण और शिक्षण ऐसे अवसर प्रदान करते हैं, जिससे अर्थ निर्माण और रचनात्मक समझ विकसित हो पाती हैं। बच्चे नई शब्दावली, तर्क–वितर्क और विश्लेषण करना सीखते हैं। वे शब्दों व वाक्यों का अर्थ समझते हैं, सुनी जा रही बात को अपने पूर्व अनुभवों से जोड़ते हैं और उसके अलग–अलग हिस्सों को एक सूत्र में पिरोना सीखते हैं। ये सब समझने से जुड़े पहलू हैं। असल में पढ़कर समझना सुनकर समझने से बहुत अलग नहीं है। अंतर केवल इतना है कि सुनने के बजाय लिखित वाक्यों को प्रवाहपूर्ण तरीके से पढ़ना पड़ता है।

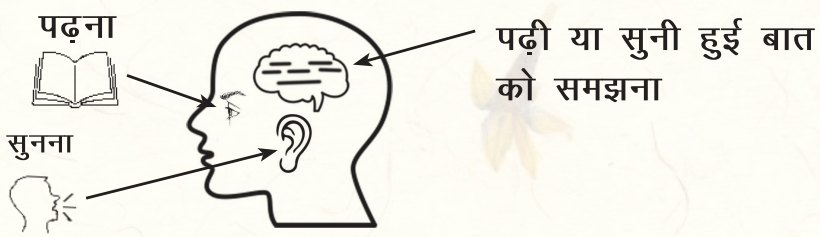

मस्तिष्क में पढ़कर समझना और सुनकर समझने के लिए एक ही यंत्र कार्य करता है।

अतः भाषाई कौशल विकसित करने के लिए हमें बच्चों के उच्चस्तरीय समझ से जुड़ी दक्षताओं पर ज़ोर देना चाहिए।

बच्चे सुनना और बोलना अपने परिवेश से स्वाभाविक रूप से सीख लेते हैं पर पढ़ना–लिखना सीखना इतना स्वाभाविक नहीं है। इसलिए इस पर व्यवस्थित रूप से कार्य किया जाना चाहिए। पढ़ने के कौशल के साथ–साथ शब्दावली, वाक्य–विन्यास, सांसारिक ज्ञान और अर्थ निर्माण के अन्य कौशल ***'पढ़कर समझने'*** के लिए आवश्यक हैं।

पठन अभ्यास के नियमित मौके: 'पढ़कर समझने' के लिए पठन अभ्यास ज़रूरी है। अतः बच्चों को पढ़ने के अभ्यास के नियमित एवं पर्याप्त मौके मिलने चाहिए ताकि वे शब्दों को सरलता के साथ पहचान पाएँ एवं अपना अधिक–से–अधिक या सारा ध्यान पाठ को समझने में लगाएँ। जो बच्चे ज़्यादा पढ़ते है, वे समय के साथ बेहतर पढ़ने लगते हैं, और जब वे बेहतर पढ़ने लगते हैं, तब उन्हें पढ़ने में और भी ज़्यादा मज़ा आने लगता है। यह दोनों ही पहलू एक–दूसरे पर निर्भर करते हैं एवं पढ़ने की आदत एवं अभ्यास के मौके से जुड़ी हुई है। इसलिए प्रतिदिन शिक्षकों को बच्चों को स्वतंत्र रूप से छोटे–छोटे पाठ, कहानियों की किताबें पढ़ने के लिए देने चाहिए।

डिकोडिंग पर कार्य: वर्णों/अक्षरों की ध्वनि को पहचानना और फिर उससे जोड़कर शब्दों में बोल पाना ही डिकोडिंग है। इसमें 2 उप–कौशल शामिल हैं:

- वर्णों एवं मात्राओं/अक्षरों की पहचान
- फिर, इन वर्णों एवं मात्राओं को जोड़कर शब्द पढ़ना

उदाहरण: जब हम 'नानी' शब्द पढ़ते हैं तब हम 'ना' और 'नी' को अलग अलग पहचानते हैं और फिर जोड़कर शब्दकी तरह पढ़ते हैं, 'नानी'।

डिकोडिंग के व्यवस्थित शिक्षण के अंतर्गत बच्चों को उपर्युक्त दोनों उप–कौशलों पर साथ–साथ कार्य करने के मौके एवं पर्याप्त अभ्यास मिलने चाहिए। इससे बच्चे जल्दी ही शब्द पढ़ना सीखना शुरू कर पाते हैं और साथ ही अर्थ–निर्माण की प्रक्रिया से जुड़ते हैं। इसके लिए जरुरी है कि वर्ण/अक्षर सिखाने का एक ऐसा क्रम काम में लिया जाए जिससे बच्चे कुछ वर्णों और अक्षरों को पहचान के साथ ही शब्द बनाना और पढ़ना सीखने लगे। इस पर हमने आगे बात की है।

कहानियों की किताबें: बच्चों की कई कहानियों में कुछ शब्द, शब्दांश या वाक्य बार–बार आते हैं। इन्हें पढ़ने के लिए बच्चों को शब्दों/वाक्यों को पढ़ने/डिकोड करने में बार–बार श्रम नहीं करना पड़ता। इस प्रकार की कहानियों से बच्चे कई शब्दों को 'दृश्य शब्द' की तरह सीख लेते हैं। इस वजह से ये कहानियाँ शुरुआती पाठकों के 'डिकोडिंग' के श्रम को कम करती हैं और उनका ज़्यादा ध्यान कहानी समझने पर लगता है। अतः यह जरुरी एवं उपयोगी है कि बच्चों को ऐसी कहानियों की किताबों को देखने, उलटने–पलटने, पढ़ने के लिए दिया जाए ताकि समय के साथ उनका संबंध किताबों की दुनिया से बन सके।

पुस्तकालय कालांश: पुस्तकालय कालांश को स्वतंत्र पठन अभ्यास के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। इसके लिए बच्चों के स्तर की किताबों को उनकी पहुँच के पास रखें और पढ़ने को प्रोत्साहित करें। कक्षा में चित्र कहानियों एवं सरल कहानियों की किताबें रखें। बच्चों में उत्साह उत्पन्न करने के लिए कहानियों की किताबों से रोचक तरीके से एवं उत्सुकता बढ़ाते हुए आधी कहानी पढ़ें और बच्चों को पूरी कहानी स्वयं से पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

6. प्रारंभिक कक्षाओं में मौखिक भाषा विकास

मौखिक भाषा के विकास का अर्थ वास्तविक तौर पर बोलने और सुनने की क्षमता से कहीं ज़्यादा होता है। स्कूल में आने के पूर्व ही बच्चे मौखिक रूप से बहुत सारे चिंतन कौशल पर पकड़ बना चुके होते है, जैसे, अनुमान लगाना, तर्क देना, अपने अनुभव साझा करना, आदि। अतः कक्षा–1 के शुरुआती दिनों में मौखिक भाषा विकास की बहुत सारी गतिविधियाँ कराई जानी चाहिए एवं सभी बच्चों को इनमें शामिल होने का पर्याप्त मौका मिलना चाहिए।

बच्चों के साथ हर रोज़ मौखिक भाषा विकास की गतिविधियाँ की जाएँ, (जैसे–चित्रों पर चर्चा, अनुभवों पर चर्चा, कहानी, कविता और गीत आदि को हाव–भाव से सुनाना और चर्चा करना आदि) तो उनका संज्ञानात्मक विकास होता है और वे शिक्षण प्रक्रिया से स्वतः ही जुड़ने लगते हैं।

मौखिक भाषा विकास के फ़ायदे आप इस चित्र संयोजक में देख सकते हैं–

भाषा शिक्षण की शुरूआत में मौखिक भाषा विकास को अधिक महत्व देना–

- स्कूल में प्रवेश से पहले ही बच्चे अपने घर की भाषा बहुत अच्छे से जानते हैं। इसलिए भाषा शिक्षण की शुरुआत बच्चे की घर की भाषा से ही की जानी चाहिए।
- स्कूल के शुरुआती (प्राथमिक स्तर) वर्षों में प्रथम भाषा में ही मौखिक अभिव्यक्ति के विकास में समय लगाना चाहिए ताकि बच्चों का अभिव्यक्ति कौशल बढ़े और वे उच्चस्तरीय चिंतन करने में सक्षम हो सकें।
- बच्चों को ज्ञात से अज्ञात, परिचित से अपरिचित की ओर बढ़ना चाहिए, (एन.सी.एफ़. 2005)। जिस भाषा में बच्चे सबसे अच्छी तरह समझते हैं (मातृभाषा), वे उसका उपयोग अपने पूर्व ज्ञान और अनुभवों द्वारा नए ज्ञान का सृजन करने में करते हैं। इससे कक्षा भी अधिक बाल केंद्रित बन जाती है।
- बच्चों की भाषा को कक्षा में स्थान देने से स्कूल की भाषा के विकास को नुकसान नहीं पहुँचता। हमारे देश में किए गए कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि जिन बच्चों की पढ़ाई उनकी अपनी भाषा में हुई है, उनका भाषा और गणित में प्रदर्शन ऐसे बच्चों के मुकाबले बेहतर रहता है जो मातृभाषा के बजाय किसी अन्य भाषा के माध्यम से पढ़कर आए हैं। (साइकिया एवं मोहंती, 2004)[1]

(साइकिया एवं मोहंती, 2004)[1]: द रोल ऑफ मदर टंग मिडियम इनस्ट्रकशन इन प्रोमोटींग एजुकेशनल अचीवमेंटः अ स्टडी ऑफ ग्रेड IV चिलड्रेन इन असाम (इंडिया)

भाग 2

कक्षा–1 में भाषा शिक्षण के अकादमिक सत्र की रूपरेखा, कार्य योजना एवं गतिविधियाँ

7. अकादमिक सत्र 2020–2021 में कक्षा–1 में भाषा शिक्षण पर कार्य

शैक्षिक सत्र 2020–2021 में, 'मिशन प्रेरणा' के तहत कक्षा–1 में भाषा सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को समृद्ध किया गया है एवं कुछ सहायक शिक्षण सामग्रियों को भी शामिल किया गया है। इस भाग में हम इन पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ

प्रेरणा सूची में हिंदी (कक्षा–1) की 14 दक्षताओं पर शिक्षण करने के लिए व्यवस्थित रूप से पूरे अकादमिक सत्र में कार्य करना आवश्यक होगा। इसके लिए पाठ्यपुस्तक– 'कलरव–1' के अलावा सहायक शिक्षण सामग्री को भी कक्षा में स्थान देना प्रस्तावित है।

कक्षा–1 में भाषा शिक्षण के कालांश

इस वर्ष कक्षा–1 में हिंदी भाषा शिक्षण के लिए 40 मिनट के 3 कालांश निर्धारित किए गए हैं। प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री, द्वितीय कालांश में 'कलरव–1' एवं तृतीय कालांश में कार्यपुस्तिका–1 पर व्यवस्थित रूप से कार्य किया जाएगा।

कालांश–1 (40 मिनट)	कालांश–2 (40 मिनट)	कालांश–3 (40 मिनट)
सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य	कलरव–1 पर कार्य	कार्यपुस्तिका–1 पर कार्य

सहायक शिक्षण सामग्रीः भाषा शिक्षण के प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य किया जाएगा। इस सत्र में कुल 4 अलग–अलग तरह की सहायक सामग्री कक्षा में उपलब्ध कराई जाएगी। इन सभी सामग्रियों का निर्माण, प्रेरणा सूची की दक्षताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। इस कालांश में, पूरे अकादमिक सत्र में व्यवस्थित रूप से भाषा शिक्षण के दो घटकों पर मुख्य रूप से कार्य किया जाएगा।

- मौखिक भाषा विकास एवं उससे संबंधित लेखन कार्य
- पठन (समझ के साथ)

आइए, अब हम देखते हैं कि ये सहायक सामग्रियाँ कौन–कौन–सी हैं एवं शिक्षण योजना में इन्हें कैसे उपयोग में लाया जाएगा।

सामग्री का नाम	उपयोगिता
कविता पोस्टर	कलरव–1 की कविताओं पर कार्य करने के अलावा कविता पोस्टर में दी गई कविताओं पर भी कार्य किया जाना है। इस सत्र में कक्षा–1 के लिए कुल 5 कविता पोस्टर दी जाएँगी इनका उपयोग कविताओं को गाने, प्रिंट चेतना एवं लोगोग्राफ़िक पठन पर कार्य करने के लिए किया जाएगा।

कहानी पोस्टर	कलरव–1 की कहानियों पर कार्य करने के अलावा कहानी पोस्टर में दी गई कहानियों पर भी कार्य किया जाना है। इस सत्र में कक्षा 1 के लिए कुल 5 कहानी पोस्टर दी जाएँगी। इनका उपयोग कहानी पढ़कर सुनाने, प्रिंट चेतना एवं लोगोग्राफ़िक पठन पर कार्य करने के लिए किया जाएगा।
चित्र चार्ट	इस सत्र में अलग–अलग विषयों पर 1 सेट में कुल 10 चित्र चार्ट दी जाएँगी। इसे मौखिक भाषा विकास की गतिविधि– चित्र चार्ट पर चर्चा के दौरान किया जाएगा। इन पर पूरे वर्ष कार्य करने की योजना है। दिए गए चित्र चार्ट के अलावा अन्य चित्र चार्ट को भी उपयोग में लाया जाना चाहिए। कलरव–1 में दिए गए चित्रों पर भी चर्चा की जानी चाहिए।
सहज–1	सहज–1 की प्रति सभी बच्चों को दी जाएगी। इसका उपयोग पठन अभ्यास के लिए किया जाना है। इसका निर्माण बच्चों को पठन अभ्यास के मौके देने के उद्देश्य से किया गया है। यह कक्षा–1 के बच्चों के पठन–स्तर को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

ऊपर दी गई सभी सामग्रियों पर आगे चर्चा की जाएगी।

कलरव–1: द्वितीय कालांश में कलरव–1 के पाठों पर भाषा शिक्षण के सभी घटकों एवं प्रेरणा सूची को आधार बनाकर कार्य किया जाएगा। इसके अंतर्गत मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग (वर्ण/मात्रा पहचान एवं इन्हें जोड़कर शब्द, वाक्यांश एवं वाक्य पठन के अभ्यास), पठन एवं लेखन पर कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इस संदर्शिका में आगे कलरव–1 एवं प्रेरणा सूची की दक्षताओं का संरेखण (alignment) किया गया है। इससे शिक्षकों को यह निरंतर रूप से पता चलता रहेगा कि पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ एवं पाठ में दिए गए अभ्यास कार्य किन–किन दक्षताओं से संबंधित हैं। इसके साथ ही, कलरव–1 के विभिन्न पाठों– कविता, कहानी, चित्र एवं वर्ण और मात्रा की पहचान पर चरणबद्ध तरीके से कैसे कार्य किया जाना है, इस पर विस्तार से चर्चा की गई है।

कार्यपुस्तिका–1: कक्षा–1 की भाषा की कार्यपुस्तिका–1 पर भाषा कालांश–3 में कार्य किया जाना प्रस्तावित है। यह कार्यपुस्तिका–1, कलरव–1 से संबंधित है। इस पर मुख्यतः डिकोडिंग से संबंधित अभ्यास कार्य किया जाना है। कार्यपुस्तिका–1 की शुरुआत में लेखन पूर्व अभ्यास से संबंधित कुछ अभ्यास दिए गए हैं। ये गतिविधियाँ सरल हैं एवं ये बच्चों को लेखन कार्य से जोड़ने में मदद करेंगी। इसके बाद आने वाले अभ्यासों में वर्ण–अक्षर की पहचान एवं उससे संबंधित लेखन कार्य और देखकर लिखो जैसे कार्य शामिल हैं।

शिक्षकों को इस कालांश में यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि सिखाए गए वर्णों एवं मात्राओं पर बच्चों को अभ्यास करने के पर्याप्त मौके मिले। कार्यपुस्तिका–1 पर डिकोडिंग से संबंधित लेखन अभ्यास के अतिरिक्त भी कॉपी में अभ्यास करवाएँ। इसके साथ–ही प्रत्येक सप्ताह में दिए गए वर्ण–मात्रा की पहचान एवं इन्हें जोड़कर पढ़ने के अभ्यास से संबधित कुछ खेल गतिविधियाँ भी कराएँ। इससे बच्चों की डिकोडिंग कौशल पर मज़बूत एवं अर्थपूर्ण पकड़ बनेगी। आगे, हम डिकोडिंग से संबंधित थोड़ी और चर्चा करेंगे।

पाठ्यपुस्तक पर प्रस्तावित कार्ययोजना के अनुसार इस अकादमिक सत्र में साप्ताहिक रूप से दूसरे एवं तीसरे कालांश के छठे दिन को पुनरावृत्ति के लिए उपयोग में लाया जाना प्रस्तावित है। किसी भी सप्ताह की पुनरावृत्ति उस सप्ताह के पहले 5 दिनों में किए गए कार्य एवं गतिविधियों से संबंधित होगी। इस पर हम आकलन एवं पुनरावृत्ति वाले खंड में दुबारा विस्तार से बातचीत करेंगे।

8. दैनिक स्तर पर भाषा के तीनों कालांशों में शिक्षण कार्य

नीचे दी गई तालिका से भाषा के तीनों कालांशों में किन–किन गतिविधियों पर कार्य किया जाना है एवं इन गतिविधियों के लिए किन सामग्रियों का उपयोग किया जाना है, इसे दर्शाया गया है:

कालांश–1 **सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य**	**कालांश–2** **कलरव–1 पर कार्य**	**कालांश–3** **कार्यपुस्तिका–1 पर कार्य**
गतिविधियाँ		
कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ **कविता/कहानी पोस्टर पर कार्य** **कहानी पर कार्य** • शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना • शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना • बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना **चर्चा** • चित्र पर चर्चा • अनुभवों पर चर्चा **कहानी पर कार्य एवं चर्चा से संबंधित लेखन कार्य** **पठन** • आदर्श वाचन • मार्गदर्शन में पठन	• **कविता पर कार्य** • **कहानी पर कार्य** • **चित्र पर चर्चा** • **वर्ण/मात्राओं की पहचान एवं शब्द पठन** (वर्ण पहचान, मात्रा पहचान, वर्ण–अक्षर जोड़कर शब्द बनाना और शब्द पठन पर कार्य) कलरव–1 के अभ्यासों पर ऊपर दी गई गतिविधियों के दौरान किया जाना है। इन पर विस्तार से संदर्शिका के भाग–2 में बातचीत की गई है।	कार्यपुस्तिका–1 में दिए गए अभ्यास कार्य कलरव–1 के पाठों से संबंधित हैं, अतः कलरव–1 के पाठों पर कार्य करने के दौरान संबंधित कार्य पुस्तिका के पृष्ठों पर कार्य किया जाना है।
सामग्रियाँ		
• कविता पोस्टर • कहानी पोस्टर • चित्र चार्ट • सहज–1 • कविताओं, कहानियों एवं मौखिक खेल गतिविधियों का संकलन	• कलरव–1 • नोटबुक • अन्य लेखन सामग्री	• कार्यपुस्तिका–1 • नोटबुक • अन्य लेखन सामग्री

9. सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना

वर्ष 2020–21 में कक्षा–1 में कुल 16 सप्ताह के शिक्षण कार्य की योजना है। इस योजना को साप्ताहिक रूप में विभाजित किया गया है। प्रत्येक सप्ताह के लिए 6 दिन का शिक्षण कार्य मानते हुए दैनिक कार्य किया जाय। दैनिक शिक्षण कार्य में 40–40 मिनट के 3 कालांशों में कार्य होगा। निम्न तालिका में इन तीनों कालांशों के लिए सप्ताहवार योजना दी जा रही है। इन कालांशों में कैसे कार्य करना है, इससे संबंधित दिशानिर्देश आगे दिए गए हैं:

सप्ताह	महीना	प्रथम कालांश (सहायक शिक्षण सामग्री)	द्वितीय कालांश (पाठ्यपुस्तक)	तृतीय कालांश (कार्य पुस्तिका)
1	सितंबर	चित्र पर चर्चा: चार्ट– 'खेत' कविता पोस्टर: हाथी कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा अनुकूल वातावरण: गतिविधियाँ	पाठ 1: मेरा देश (पृष्ठ 11) पाठ 2: बाग़ (पृष्ठ 12–16)	पृष्ठ संख्या: 6–10
2	सितंबर	चित्र पर चर्चा: चार्ट– 'परिवार' कहानी पोस्टर: मेंढक का गाना कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा अनुकूल वातावरण: गतिविधियाँ	पाठ 3: तालाब (पृष्ठ 13–14) पाठ 4: हुआ सवेरा (पृष्ठ 19) पाठ 5: लिखने की तैयारी (पृष्ठ 20–21)	पृष्ठ संख्या: 11–23
3	सितंबर	चित्र पर चर्चा: चार्ट– 'सड़क' कविता पोस्टर: काशीफल कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा अनुकूल वातावरण: गतिविधियाँ	पाठ 6: वर्णमाला गीत (अ....ई) पृष्ठ 22	पृष्ठ संख्या: 24
4	अक्टूबर	चित्र पर चर्चा: चार्ट– 'खेल' कहानी पोस्टर: भालू और मदारी कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा अनुकूल वातावरण: गतिविधियाँ	पाठ 6: वर्णमाला गीत (उ....अः) पृष्ठ 23–24	पृष्ठ संख्या: 24–26

5	अक्टूबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'मेला' कविता पोस्टरः अलमारी कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 6ः वर्णमाला गीत (क....झ, ञ) पृष्ठ 25–26 और शब्दों पर कार्य	पृष्ठ संख्याः 27–28
6	अक्टूबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'दंगल' कहानी पोस्टरः पतंग और बकरी कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 6ः वर्णमाला गीत (ट....न) पृष्ठ 27–28 और शब्दों पर कार्य	पृष्ठ संख्याः 28–30
7	नवंबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'होली' कविता पोस्टरः चींटी कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 6ः वर्णमाला गीत (प....व) पृष्ठ 29–30 और शब्दों पर कार्य	पृष्ठ संख्याः 30–31
8	नवंबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'बाजार' कहानी पोस्टरः रामसहाय की साइकिल कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 6ः वर्णमाला गीत (श...श्र, ड़, ढ़) पृष्ठ 31–35 और शब्दों पर कार्य	पृष्ठ संख्याः 31–32
9	नवंबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'बरसात' कविता पोस्टरः बरसात कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 7ः पतंग (पृष्ठ 36–38) कितना सीखा? (पृष्ठ 39)	पृष्ठ संख्याः 33–44
10	दिसंबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'नदी' कहानी पोस्टरः दो चींटी कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 8ः रसोई (मात्राः आ.. ..ऋ तक) (पृष्ठ 40–43) और शब्दों पर कार्य	पृष्ठ संख्याः 45–48 मात्रा अभ्यास के लिए पृष्ठ संख्या 61–65

11	दिसंबर	सहज–1* पृष्ठ संख्याः 1–4 (शब्द)	पाठ 8ः रसोई (मात्राः ए... .अः) और शब्दों पर कार्य (पृष्ठ 44–45) पाठ 9ः बतख और चूजा (पृष्ठ 46–48)	मात्रा अभ्यास के लिए संख्याः 66–73 पृष्ठ संख्याः 49–51
		सप्ताह 11 में प्रथम सावधिक आकलन किया जाना है। आकलन के आधार पर सप्ताह–12 में अभ्यास एवं पुनरावृत्ति पर कार्य किया जाएगा। इस पर 'आकलन एवं पुनरावृत्ति' वाले खंड में चर्चा की गई है।		
12	जनवरी	सहज–1 पृष्ठ संख्याः 5–8 (शब्द और वाक्य)	आकलन के बाद वर्ण–मात्रा और शब्द पर अतिरिक्त अभ्यास और पुनरावृत्ति	पृष्ठ संख्याः 60–73 को आधार बनाकर पढ़ने और लिखने का अभ्यास पृष्ठ संख्याः 76–82
13	जनवरी	सहज–1 पाठ संख्याः 1–3	पाठ 12ः स्टेशन (पृष्ठ 57–59) पाठ 14ः जया, जगत और जुगनू (पृष्ठ 63–65)	पृष्ठ संख्याः 52–56
14	फरवरी	सहज–1 पाठ संख्याः 4–6	पाठ 15ः दादा जी (पृष्ठ 66–67) पाठ 18ः जाड़ा, गर्मी और बरसात (पृष्ठ 79–81)	पृष्ठ संख्याः 57–59 पृष्ठ संख्याः 74–75
15	फरवरी	सहज–1 पाठ संख्याः 7–9	पाठ 20ः चंदा मामा (पृष्ठ 85–86) कितना सीखा? (पृष्ठ 87, प्रश्न 1 एवं 2) पाठ 22ः जूही का जन्मदिन (पृष्ठ 91)	पृष्ठ संख्याः 83–87
16	फरवरी	सहज–1 पाठ संख्याः 10–12 अतिरिक्त पठन	आकलन के बाद वर्ण–मात्रा और शब्द पर अतिरिक्त अभ्यास और पुनरावृत्ति	शब्द पढ़ने और लिखने का अभ्यास

*प्रथम कालांश में वर्णित सहज–1 बच्चों के पठन अभ्यास के लिए एक पुस्तिका है जिसमें शब्द, वाक्य और चित्र सहित छोटे–छोटे पाठ दिए गए हैं। इसे केवल पठन अभ्यास के लिए काम में लाया जाएगा। इस पर लेखन का कार्य करवाना प्रस्तावित नहीं है।

विशेष ध्यान दें:

1. वर्णमाला के वर्णों को ध्यान में रखते हुए योजना में सप्ताहवार वर्णों की संख्या तय की गई है ताकि बच्चों को इन्हें सीखने का उचित समय मिल पाए।

2. सप्ताह 3 से प्रत्येक सप्ताह का छठा दिन पुनरावृत्ति के लिए रखें। इस दिन आप उन बच्चों के साथ विशेष समय देकर कार्य करें, जो सप्ताह के दौरान सिखाई गई विषयवस्तु को ठीक से नहीं सीख पाए हैं।

3. 12वें और 16वें सप्ताह किसी नए पाठ पर कार्य ना करें बल्कि आकलन के आधार पर पुनरावृत्ति की एक योजना बनाएँ और उस पर कार्य करें। आकलन संबंधी आवश्यक जानकारी आगे दी गई है।

4. सप्ताह 3 से वर्ण–पहचान पर कार्य की योजना है। आप सप्ताह 5 से बच्चों को सीखे गए वर्णों से बनने वाले शब्दों को सिखाने पर भी कार्य करें। इसके लिए 'कलरव–1 के पाठों पर कैसे कार्य करें?' में वर्णित 'जोड़कर शब्द बनाना और शब्द पठन' पर ग़ौर करें। आप पहले से इन शब्दों को चिह्नित कर लें। जैसे, सप्ताह 5 तक सीखे गए वर्णों से ये शब्द बन सकते हैं – आई, आओ, आग, एक, आज, ईख, इत्यादि।

5. सप्ताह 11 से लेकर सप्ताह 16 तक, प्रथम कालांश में (सहायक शिक्षण सामग्री) 'सहज–1' पर कार्य किया जाना है। 11वें एवं 12वें सप्ताह में शब्द पठन एवं वाक्य पठन पर कार्य किया जाना है। फिर सप्ताह 13 से प्रत्येक पाठ पर 2 दिन कार्य किया जाना प्रस्तावित है और एक सप्ताह में 3 पाठों पर कार्य किया जाएगा।

6. सभी बच्चों के सीखने की गति समान नहीं होती है। इस कारण से हमारी कक्षा में अक्सर ऐसे बच्चे पाए जाते हैं जो भाषा कौशलों में सामान्य से निचले स्तर पर होते हैं। अक्सर ऐसे बच्चे अपने आप को कक्षा की शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ नहीं पाते हैं, जिसके कारण भाषाई कौशलों में पिछड़े हुए बच्चे पिछड़ते ही चले जाते हैं। इस प्रकार के बच्चे भाषा में पिछड़े होने के कारण अन्य विषयों में भी अपनी समझ को बढ़ाने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। ऐसे बच्चों पर अपनी कक्षा में विशेष ध्यान दें और उनके बुनियादी कौशलों को विकसित करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण कार्य करें।

7. अगर किन्हीं कारणों की वजह से किसी सप्ताह में निर्धारित शिक्षण योजना पर पूर्ण रूप से कार्य नहीं हो पाए तो शिक्षक अगले सप्ताह के निर्धारित कार्य शुरू करने के पहले पिछले सप्ताह के छूटे हुए कार्यों एवं गतिविधियों को करवाएँ।

सहायक सामग्री/प्रेरणा सूची की दक्षताएँ	H101	H102	H103	H104	H105	H106	H107	H108	H109	H110	H111	H112	H113	H114
कविता	✓													
मौखिक खेल गतिविधि			✓	✓	✓									
कविता पोस्टर	✓													
कहानी पोस्टर	✓	✓	✓	✓	✓									
कहानी पर कार्यः														
शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना	✓	✓	✓	✓	✓									
शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना	✓	✓	✓	✓	✓									
बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना	✓	✓	✓	✓	✓									
चर्चाः														
चित्र चार्ट पर चर्चा			✓	✓	✓									
अनुभवों पर चर्चा			✓	✓										
कहानी पर कार्य एवं चर्चा से संबंधित लेखन कार्य													✓	✓
पठनः														
आदर्श वाचन	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓							
मार्गदर्शन में पठन	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓		

11. सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य करने की सामान्य रूपरेखा

सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य करने की सामान्य रूपरेखा

मौखिक भाषा विकास एवं लेखन

- **कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ**
- **कविता/कहानी पोस्टर**
- **कहानी पर कार्य**
  - शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना
  - शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना
  - बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना
- **चर्चा**
  - चित्र पर चर्चा
  - अनुभवों पर चर्चा

पठन

- **आदर्श वाचन**
- **मार्गदर्शन में पठन**

मौखिक भाषा विकास के अंतर्गत कहानी पर कार्य एवं चर्चा की गतिविधियों से संबंधित लेखन कार्य

पुस्तकालय/लाइब्रेरी कालांश

- पुस्तकालय/लाइब्रेरी कालांश में सहज–1 का उपयोग करें। अन्य पठन सामग्री (पाठ्यपुस्तक एवं कहानियों की किताबें) के साथ–साथ, बच्चों को स्वतंत्र रूप से सहज–1 पढ़ने का अवसर एवं समय प्रदान करें। आप चाहें तो 40 मिनट के कालांश में से 10–15 मिनट सहज–1 के स्वतंत्र पठन के लिए भी निर्धारित कर सकतें है और बाकी समय में बच्चों को अपनी इच्छा से उनकी मनपसंद किताब पढ़ने का मौका दें।
- पुस्तकालय कालांश का उपयोग स्वतंत्र पठन के लिए किया जाना चाहिए। इससे बच्चों का जुड़ाव किताबों से हो पाएगा और वे पढ़ने की प्रक्रिया से (धीरे–धीरे) स्वतः ही जुड़ने लगेंगे।
- पुस्तकालय कालांश के आख़िर के 5–10 मिनट में बच्चों के साथ यह अवश्य चर्चा करें कि उन्होंने क्या पढ़ा है। जो किताब उन्होंने पढ़ी हैं, उसमें उन्हें क्या अच्छा लगा और क्यों?

12. प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य: सप्ताह 1 से 10

इस चरण में मुख्य रूप से मौखिक भाषा विकास के चार अलग–अलग प्रकार की गतिविधियों पर कार्य किया जाएगा एवं इसके उपरांत इनसे संबंधित लेखन कार्य भी किया जाएगा। इन गतिविधियों को बच्चों के साथ करने का मुख्य उद्देश्य उनकी मौखिक अभिव्यक्ति को मुखर करना है। कहानी एवं चर्चा पर कार्य से संबंधित लेखन कार्य के द्वारा हम बच्चों के बीच यह स्थापित कर पाने में सफल होंगे कि अपनी समझ को लेखन के माध्यम से भी साझा किया जा सकता है।

मौखिक भाषा विकास एवं लेखन– 40 मिनट

5–7 मिनट (प्रतिदिन)	**कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ** • कविता (सप्ताह में 3 दिन) • मौखिक खेल गतिविधि (सप्ताह के बाकी 3 दिन)
15–20 मिनट (सप्ताह में 1 दिन)	**कविता या कहानी पोस्टर पर कार्य (सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना के अनुसार)**
15–20 मिनट (सप्ताह में 3 दिन)	**कहानी पर कार्य** • शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना (1 दिन) • शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना (1 दिन) • बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना (1 दिन)
15–20 मिनट (सप्ताह में 2 दिन)	**चर्चा** • चित्र पर चर्चा (1 दिन) • अनुभवों पर चर्चा (1 दिन)
10–15 मिनट (प्रतिदिन)	**कहानी पर कार्य एवं चर्चा की गतिविधियों से संबंधित लेखन कार्य**

ध्यान देने योग्य बातें:

- मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों में बच्चों की शत–प्रतिशत भागीदारी के लिए बच्चों के घर की भाषा/प्रथम भाषा का उपयोग करना कारगर सिद्ध होता है। इससे बच्चे अपने मन की बात, विचार एवं अनुभव खुलकर कह पाते हैं और कक्षा की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जुड़ पाते हैं।
- अकादमिक सत्र की शुरुआत में सरल गतिविधियों का चयन किया जाना चाहिए और जैसे–जैसे सत्र आगे बढ़ेगा गतिविधियों की जटिलता को थोड़ा बढ़ाया जाना चाहिए।
- बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना एक उच्चस्तरीय कौशल है। इसलिए इस पर 2–3 सप्ताहों के बाद कार्य किया जाना चाहिए। शुरुआत में हो सकता है कि बच्चे कहानी वैसे ना सुना पाएँ जैसा उनको सुनाया गया हो। वे कुछ घटनाएँ एवं कहानी के पात्र भूल सकते हैं या अपने मन से कोई दूसरी ही कहानी सुना दें। यहाँ मुख्य उद्देश्य बच्चों को भयरहित वातावरण में बातचीत के अवसर प्रदान करना है।

सामग्री सूची	
मौखिक भाषा विकास एवं लेखन	
गतिविधि	**सामग्री**
कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ (कविता/मौखिक खेल गतिविधि)	स्थानीय कविताएँ, कविता पोस्टर, संदर्शिका में दी गई कविताओं का संकलन
कविता/बालगीत गाना	कविता पोस्टर
शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना	कहानी पोस्टर, स्थानीय कहानियाँ, संदर्शिका में दी गई कहानियों का संकलन
शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना	कहानी पोस्टर, कहानियों की किताबें, संदर्शिका में दी गई कहानियों का संकलन
चित्र पर चर्चा	चित्र चार्ट
बच्चों के अनुभवों पर चर्चा	चयनित विषय

13. प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री 'सहज–1' पर कार्यः सप्ताह 11–16

इस चरण की शुरुआत सप्ताह 11 से होगी पहले दो सप्ताहों में शब्द एवं वाक्य पठन पर कार्य किया जाएगा। सप्ताह 13 से लेकर सप्ताह 16 तक प्रत्येक सप्ताह में 3 पाठों पर कार्य किया जाएगा। हर पाठ पर 2 दिन कार्य किया जाना है। पहले दिन शिक्षक द्वारा पाठ का आदर्श वाचन किया जाएगा एवं दूसरे दिन शिक्षक के मार्गदर्शन में बच्चों द्वारा पठन अभ्यास किया जाएगा।

पठन– 40 मिनट
(सप्ताह में प्रतिदिन)

आदर्श वाचन (1 दिन)	मार्गदर्शन में पठन (1 दिन)

सामग्री सूची	
पठन	
गतिविधि	**सामग्री**
आदर्श वाचन/मार्गदर्शन में पठन	सहज–1

14. प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री से संबंधित गतिविधियों का विस्तृत विवरणः सप्ताह 1–10

इस चरण में मौखिक भाषा विकास के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ की जाएँगीः

मौखिक भाषा विकास एवं लेखन

- कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ
- कविता/कहानी पोस्टर पर कार्य
- कहानी पर कार्य
- चर्चा
- कहानी पर कार्य एवं चर्चा की गतिविधियों से संबंधित लेखन कार्य

कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँः

कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों को कुछ गतिविधियाँ नियमित रूप से कराई जानी चाहिए लेकिन इसमें बहुत सारा समय लगाने की आवश्यकता नहीं होती है। 5–7 मिनट इस गतिविधि को करने के लिए पर्याप्त होता है। ये गतिविधियाँ रोचक होने के साथ–साथ अधिगम से भी जुड़ी होनी चाहिए। कक्षा–1 में इसके लिए 2 गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं–

- **कविता**
- **मौखिक खेल गतिविधि**

कविताः कलरव–1, कविता पोस्टर एवं स्थानीय कविताओं को इस गतिविधि में सम्मिलित किया जा सकता है। कविताओं को उपयुक्त हाव–भाव के साथ शिक्षक और बच्चों द्वारा साथ में गाया जाना चाहिए। कक्षा–1 की शुरुआत में छोटे, सरल एवं स्थानीय कविताओं को सम्मिलित करें।

मौखिक खेल गतिविधिः बच्चों के परिवेशीय खेलों के साथ–साथ कुछ मौखिक खेल गतिविधियाँ भी कराई जानी चाहिए। खेलों में बच्चों को नियम सुनकर याद रखना और पालन करना पड़ता है। कई खेल ऐसे होते हैं जिसमें ध्यान से सुनकर समझे बिना खेल आगे नहीं बढ़ता है। भाग 4 में कुछ ऐसी मौखिक खेल गतिविधियाँ दी गई हैं। इन्हें देखें और कक्षा में इनका प्रयोग करें।

कविता पोस्टरः कविता पोस्टर को कविता गाने के साथ–साथ बच्चों के साथ प्रिंट चेतना पर कार्य करने के लिए उपयोग में लाएँ। लोगोग्राफ़िक पठन अभ्यास के मौके भी बच्चों को दें। किसी कविता पर काम करने के दौरान उनमें आए 2–3 मुख्य शब्दों को बोर्ड पर लिखे और उसे एक छवि की तरह पढ़ने का अभ्यास (लोगोग्राफ़िक पठन) बच्चों से कराएँ।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H101

शुरुआत के दिनों में छोटी–छोटी कविताओं का चयन करें। यह गतिविधि कालांश की शुरुआत में करना उपयुक्त होगा। यहाँ ध्यान रखें कि कक्षा के सारे बच्चे इस गतिविधि में समान रूप से भाग ले रहे हों।

इस पर कार्य करने के निम्नलिखित चरण हैं:

शिक्षक पहले बच्चों को कविता लय के साथ गाकर सुनाएँ।

फिर, शिक्षक कविता गाएँ व बच्चों को साथ में दोहराने के लिए कहें।

ऐसा 2–3 बार करें ताकि बच्चे कविता की लय और शब्दों को अच्छे से समझ पाएँ।

सुनाई गई कविता के विषय से जुड़ी कोई और कविता बच्चों को याद दिलाएँ और उन्हें सुनाने को कहें। अगर कोई ऐसी कविता नहीं है तो पिछली सुनी हुई कविता उनसे सुनें।

ध्यान देने योग्य बातें:

- कविता पर आधारित प्रश्न–उत्तर न पूछें। बच्चों के लिए कविता गाना एक रोचक अनुभव होना चाहिए।
- हो सकता है बच्चे कविता का पूरा अर्थ न समझ पाएँ। इसकी चिंता न करें। यहाँ उद्देश्य है कि बच्चों को उत्साहपूर्ण एवं रोमांचक माहौल में कविता सुनने और उसे दोहराने का मौका मिले।
- कविता पोस्टर पर कार्य करते समय बच्चों को चित्रों और लिखे हुए शब्दों/वाक्यों को देखने के लिए भी प्रोत्साहित करें।

शब्दावली का विवरण

- **प्रिंट चेतना:** बच्चों में यह समझ कि जो वे बोल रहे हैं, उसे लिखा भी जा सकता है और जो लिखा गया है, उसे पढ़ा जा सकता है, प्रिंट चेतना का हिस्सा है। वे मौखिक और लिखित भाषा के संबंध को समझने लगते हैं तथा वाक्यों और उनमें आए शब्दों में अंतर पहचानना शुरू कर देते हैं। वे किताबों और उनकी विशेषताओं को भी समझने लगते हैं।
- **लोगोग्राफ़िक पठन:** जब बच्चे लिखे हुए शब्दों को अर्थपूर्ण चित्रों की तरह पहचानने लगते हैं, तो वह लोगोग्राफ़िक पठन कहलाता है। प्रारंभिक कक्षाओं में उनके सामने अलग–अलग प्रकार की लिखित सामग्री आती है, जैसे– कहानियों की किताबें, कविताएँ आदि। जब शिक्षक इस सामग्री का उपयोग करते हुए अलग–अलग गतिविधियाँ करवाते हैं, तब धीरे–धीरे बच्चे उनमें लिखे गए कुछ चुनिंदा शब्द तस्वीर की तरह पहचानने लगते हैं।

कहानी पोस्टर पर कार्य: बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाने के दौरान कक्षा में उपलब्ध कहानी पोस्टर का इस्तेमाल करें। इसका इस्तेमाल शिक्षक प्रिंट चेतना पर कार्य करने के लिए भी कर सकते हैं। इसकी मदद से लोगोग्राफ़िक पठन अभ्यास के मौके भी बच्चों को दें। किसी कहानी पर काम करने के दौरान उसमें आए 2–3 मुख्य शब्दों को बोर्ड पर लिखें और उसे छवि की तरह पढ़ने का अभ्यास (लोगोग्राफ़िक पठन) बच्चों से कराएँ।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H101 -H105

कहानी पर कार्यः कहानी सुनाना (एवं पढ़ना) बच्चों के लिए अपनी एवं अन्य संस्कृतियों की समझ विकसित करता है और उन्हें सहिष्णु बनाता है। इसके साथ–ही–साथ, बच्चों का संज्ञानात्मक विकास भी होता है। कहानी सुनकर जब बच्चे उस पर प्रतिक्रिया दे रहे होते हैं तब वे मौखिक रूप से तर्क, अनुमान लगाना, विश्लेषण करना, आलोचनात्मक अन्वेषण जैसी जटिल मानसिक क्रियाएँ कर रहे होते हैं। कहानी सुनने से एवं उसके विभिन्न पहलुओं पर बातचीत करने से उनकी कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकता में वृद्धि होती है।

कहानी पर कार्य के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार की गतिविधियाँ कराई जाएँगीः

शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना

शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना

बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना

शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से स्थानीय कहानी सुनानाः कहानी सुनाने से पहले शिक्षक तैयारी के तौर पर कहानी समझ लें। अगर कोई मुश्किल शब्द या अवधारणा इस कहानी से जुड़ी है तो उसे नोट कर लें ताकि कहानी सुनाते समय आप उसे बच्चों को समझा सकें। इस गतिविधि के लिए कहानी के चयन में आवश्यक ध्यान देना चाहिए। बच्चों के लिए कहानी ऐसी ली जाए जो रोचक, छोटी, सरल और उनके बौद्धिक स्तर के अनुरूप हो। कहानी के लिए स्पष्ट और सरल भाषा शैली का इस्तेमाल करें। इसके साथ–साथ स्थानीय भाषा के शब्दों का भी उपयोग करें। एक दिन में एक ही कहानी पर कार्य करें।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H101 -H105

मौखिक रूप से कहानी सुनाने के चरणः

- कहानी सुनाने से पहले बच्चों को कहानी का नाम बताएँ और अनुमान लगवाएँ (कहानी में क्या होगा? कहानी में कौन होंगे?)
- कहानी सुनाते समय आवाज़ में उतार–चढ़ाव और हाव–भाव का उपयोग करें।
- पठन के दौरान अधिक चर्चा करने से बचें। बीच–बीच में 1–2 अनुमान लगाने वाले प्रश्नों को पूछ कर यह सुनिश्चित करें कि बच्चों का पूरा ध्यान कहानी सुनने पर है।
- अगर कोई कठिन या अनजान शब्द कहानी के दौरान मिले तो बच्चों को उसका अर्थ स्थानीय भाषा एवं उदाहरण की मदद से समझा दें।
- कहानी सुनाने के बाद बच्चों से बातचीत करें। ऐसे प्रश्नों की मदद लें जो बच्चों को अर्थ निर्माण में मदद करे।

शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना: किसी पाठ को पढ़कर सुनाने से बच्चों को लिखित भाषा को सुनकर समझने का मौका मिलता है, जिससे बच्चे लक्षित भाषा की वाक्य बनावट और शब्दावली समझ पाते हैं। इससे बच्चे यह भी समझ पाते हैं कि किसी पाठ को कैसे पढ़ा जाता है। पढ़कर सुनाना एक संवादात्मक प्रकिया है, जिसमें बच्चे और शिक्षक लिखित पाठ को आधार बनाकर समृद्ध चर्चा करते हैं। इसके लिए कहानी की कोई अच्छी किताब ली जा सकती है। किताब का चयन बच्चों के परिवेश, भाषायी स्तर, रुचि, इत्यादि को ध्यान में रखकर करना चाहिए। कहानी छोटी हो, उसमें वाक्य संरचना सरल हो एवं शब्द परिचित हों और बच्चों के संदर्भ से जुड़े हों।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H101 -H105

कहानी पढ़कर सुनाने के चरण:

- कहानी सुनाने से पहले कहानी के शीर्षक और चित्र को दिखाकर कहानी के बारे में अनुमान लगवाएँ।
- शिक्षक बच्चों को गोले या नज़दीक में बिठाकर ऊँची आवाज़ में उचित लय और उतार–चढ़ाव के साथ कहानी को पढ़कर सुनाएँ।
- पठन के दौरान अधिक चर्चा नहीं की जाए। ये जरूर सुनिश्चित करें कि बच्चों का कहानी सुनने पर पूरा ध्यान है।
- कहानी सुनाने के बाद बच्चों के अनुमान पर चर्चा करें।
- फिर, बच्चों से प्रश्नों की मदद से चर्चा को समृद्ध करें। इसके लिए बंद छोर (तथ्यात्मक प्रश्न) एवं खुले छोर (उच्चस्तरीय चिंतन कौशल के प्रश्न), दोनों तरह के प्रश्न पूछें।

खुले छोर के प्रश्न पूछकर बच्चों को कल्पना करने, तर्क–वितर्क करने, अपने अनुभव साझा करने, दो चीज़ों के बीच संबंध स्थापित करने, आलोचना करने एवं विश्लेषण करने के मौके दिए जाने चाहिए। इससे उनको अलग–अलग चीज़ों पर अपनी समझ बनाने का अवसर प्राप्त होगा और साथ–ही अपने विचारों एवं बातों को व्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त करने का भी अवसर मिलेगा।

खुले छोर के प्रश्नों के उत्तर एक से अधिक हो सकते हैं। बच्चों के उत्तर उनके अनुभवों, घर एवं आस–पास के माहौल और दूसरों के साथ की गई बातचीत से प्रेरित होते हैं। अतः यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि बच्चों के उत्तरों को नकारा ना जाए। हरेक बच्चे का दृष्टिकोण दूसरों से अलग एवं समान रूप से महत्वपूर्ण है इसलिए इसे कक्षा में स्थान मिलना चाहिए। यहाँ सही और गलत होने की गुंजाइश न के बराबर है।

नोट: कलरव–1 के कहानी संबंधित पाठों पर कार्य करते समय इन बातों का एवं कहानी पढ़कर सुनाने के दिए गए चरणों को उपयोग में लाया जाना चाहिए।

कहानियों की किताबों का चयन

बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाने के लिए सही किताबों का चयन करना आवश्यक है। कक्षा –1 के बच्चों के लिए किताबों का चयन करते समय निम्नलिखित बातों का ख़याल रखा जाना चाहिए:

- कहानियों की किताबों का चयन बच्चों के परिवेश, रुचि एवं उनके अनुभव के अनुरूप होना चाहिए। इनमें दी गई कहानियाँ उनके जीवन के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए।
- शुरुआत में छोटी–छोटी कहानियों का चयन किया जाना चाहिए, जिसमें सीमित घटनाएँ एवं पात्र हों। समय के साथ थोड़ी बड़ी कहानियाँ उपयोग में ली जानी चाहिए जिनमें पहले की अपेक्षा ज़्यादा घटनाएँ एवं पात्र हों।
- कहानी का विषय एवं पटकथा बच्चों की रोज़मर्रा की दुनिया के नज़दीक होना चाहिए। इससे बच्चों को कहानियों से जुड़ने में मदद मिलती है। अमूर्त विषय या संज्ञानात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण पटकथा को न चुनना बच्चों के हित में होता है।
- कहानी की किताब का चयन करते समय यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि इन कहानियों का अंत सरल एवं रोचक हो।
- छोटे बच्चों को प्रायः ऐसी कहानियाँ अच्छी लगती है जिनमें काल्पनिक पात्र एवं अद्‌भुत घटनाएँ हो, जैसे बोलती हुई बकरी, उड़ता हुआ घर, सब्जियों के बीच में झगड़े, आइसक्रीम का तालाब आदि। इसलिए कहानियों का चयन करते हुए इस बात पर ध्यान देना चाहिए।
- ये कहानियाँ ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ावा दे।

बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना: कहानी सुनना एक आनंददायक अनुभव तो है ही परंतु इसके साथ–ही, यह साक्षरता के कौशल से भी जुड़ा हुआ है। कहानी सुनने से बच्चों में मौखिक भाषा के कई कौशल विकसित होते हैं जिनमें से सुनी हुई कहानियों को अपने शब्दों में सुना पाना एक अहम कौशल है। बच्चों के समझ के स्तर को बढ़ाने में यह कौशल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब बच्चे कहानी पर आधारित अपनी समझ को अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं तो उन्हें अपनी भाषाई क्षमता को उपयोग करने का एक महत्वपूर्ण अवसर मिलता है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H101 -H105

बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाने के चरण:

पहले सुनाई गई किसी कहानी को संक्षेप में बच्चों को सुनाएँ।

फिर, बच्चों को उसी कहानी को अपने शब्दों में सुनाने का अवसर दें। प्रयास करें कि कक्षा के सभी बच्चों को इस गतिविधि में हिस्सा लेने का मौका मिले।

बच्चों द्वारा सुनाई गई कहानी की सराहना करें।

अगर कहानी सुनाने की प्रक्रिया में बच्चों को मदद की आवश्यकता हो (शब्दावली या वाक्य संरचना के स्तर पर) तो अवश्य ही मदद करें।

इस गतिविधि में यह संभावना है कि बच्चे अपनी कल्पना से कहानी में कुछ अन्य घटनाएँ भी जोड़ें और वे कहानियों को और रोचक बना डालें। इस बात पर बच्चों को टोके बिना, उनकी प्रशंसा करें।

कहानी के दौरान शब्दावली विकास के तरीके

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H103

शब्दों की किसी भी वाक्य, कहानी या सुनी गई बातों को समझने में बहुत बड़ी भूमिका होती है। इसलिए बच्चों के शब्द–भंडार में वृद्धि होना बहुत ज़रूरी हो जाता है। यह कोई अलग गतिविधि नहीं है। कहानी सुनाने/ पढ़कर सुनाने/ चर्चा के दौरान आए कुछ ऐसे शब्दों, जिनसे बच्चे अच्छी तरह परिचित नहीं हैं, उन पर व्यवस्थित तरीके से कार्य करने की जरूरत है। इसे इन गतिविधियों के तुरंत बाद किया जाना चाहिए।

इसके लिए निम्नलिखित तरीके से कार्य करें–

- ऐसे शब्दों का चयन करें जिन्हें बच्चों ने कम सुना है या जिनसे वे परिचित ना हों। ये शब्द कहानी/ चर्चा में समझ बनाने के लिए एक मुख्य भूमिका में हों। एक दिन में 2–3 शब्दों पर ही कार्य करें।
- पहले शब्द के अर्थ पर चर्चा करें। कहानी में दिए संदर्भ में ही अर्थ समझाएँ।
- शब्द को 2–3 वाक्यों में प्रयोग कर बताएं। ये वाक्य अलग–अलग तरह के हों।
- बच्चों को उन शब्दों का उपयोग करते हुए कुछ वाक्य बनाने को कहें। उन वाक्यों पर गौर करें कि बच्चे शब्द के अर्थ और संदर्भ को समझ कर वाक्य बना पा रहे हैं या नहीं।
- ऐसे शब्दों को एक चार्ट पर लिखकर शब्द–भंडार के शब्दों की सूची तैयार करें और उस पर सप्ताह में एक बार चर्चा करें।

चर्चा: इस गतिविधि के अंतर्गत कक्षा में 2 तरह के कार्य किए जाएँगे:

चित्र पर चर्चा **अनुभवों पर चर्चा**

चित्र पर चर्चा: कक्षा में बच्चों के साथ चर्चा करने के लिए चित्रों का उपयोग किया जाएगा। इसके लिए चित्र चार्ट में दिए गए चित्रों पर काम होगा।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H103 -H105

चित्र पर चर्चा करने के दौरान किन बातों का ख़याल रखा जाना चाहिए एवं चर्चा के विभिन्न पहलुओं पर कलरव–1 के पाठों पर कार्य के दौरान विस्तृत चर्चा करेंगे। इसलिए यहाँ पर हम केवल इसके चरणों को देखेंगे।

चित्र पर चर्चा करने के चरणः

सभी बच्चों को अर्द्ध गोले में शिक्षक के सामने चेहरा करके बिठाएँ। शिक्षक एवं बच्चे इतने समीप होने चाहिए कि सभी बच्चों को चित्र चार्ट स्पष्ट रूप से दिख रहा हो।

बच्चों को चित्र चार्ट देखने को कहें एवं चार्ट से संबंधित सीधे, सरल एवं तथ्यात्मक प्रश्न पूछें। *(जैसे– इस चित्र में क्या–क्या दिख रहा है? इस चित्र में कौन–कौन हैं?)* ऐसे प्रश्नों के पूछे जाने पर बच्चों को, चित्र को समग्र रूप से देखने का मौका मिलता है एवं चित्र के विभिन्न पहलुओं पर भी उनका ध्यान जाता है।

अब, चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए अर्थ निर्माण के प्रश्न शामिल करें जिससे बच्चों को अनुमान लगाने, तर्क देने, कल्पना करने एवं अपने अनुभव साझा करने के मौके मिले। *(जैसे– तुम्हें यह कहाँ/ किस समय का चित्र लगता है और क्यों? इस चित्र में यह लड़की क्या सोच रही होगी? ये लोग क्या बात कर रहे होंगे?*

ध्यान देने योग्य बातेंः इस बात का ध्यान रखें की उपयोग में लाए जाने वाले चित्र रंगीन हों। ब्लैक एंड व्हाइट चित्रों में रंग न होने के कारण चित्रों के अनेक पहलुओं पर बातचीत करना संभव नहीं हो पाता है और बच्चों को यह नीरस भी लगता है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H103, H104

अनुभव पर चर्चाः अनुभव पर चर्चा करना मौखिक भाषा विकास की एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। बच्चों से उनके अनुभव सुनने से पहले शिक्षक को भी अपने अनुभव सुनाने चाहिए। उदाहरण के लिए, अगर बच्चों से उनकी दिनचर्या पर चर्चा कर रहे हैं तो शिक्षक बता सकते हैं कि वे दिन भर क्या–क्या करते हैं। किसी एक दिन एक अनुभव पर चर्चा कर सकते हैं। अगर विषय ऐसा है जिसमें बच्चों को मज़ा आ रहा है और उनकी खूब भागीदारी हो रही है तो एक विषय पर दो या तीन दिन तक भी चर्चा की जा सकती है। बच्चों के अनुभव पर चर्चा के लिए निम्नलिखित विषय लिए जा सकते हैंः

बच्चों के अनुभव के लिए कुछ विषय		
• बच्चों की दिनचर्या • खेल • गाँव/घर/सड़क में घटी कोई घटना • घर से स्कूल आते–जाते क्या–क्या दिखता है • यात्रा का कोई अनुभव • बच्चों द्वारा देखे गए सपने • पोशाक के बारे में	• दोस्तों के बारे में • बाजार, मेला, आदि में जाने के अनुभव • खेत में किए जाने वाले काम • घर और गाँव में पाए जाने वाले जानवर • त्योहार	• परिवार में हुए आयोजन, जन्मदिन, शादी आदि • यातायात के साधन और उनके अनुभव • मौसम–गर्मी, बरसात • गाने–नृत्य के बारे में • खाने–पीने की चीज़ें और उनकी पसंद

शिक्षक प्रत्येक बच्चों के अनुभवों में आए कुछ मुख्य शब्द या वाक्य बोर्ड पर लिखें, फिर उनको पढ़कर सुनाएँ। इससे बच्चों को यह समझ में आएगा कि जो बोला जाता है, उसे लिखा भी जा सकता है।

अनुभव पर चर्चा करने के चरणः

शिक्षक पहले किसी एक विषय का चयन करें। ये विषय बच्चे के स्तर एवं परिवेश वाले हों।

चयनित विषय पर शिक्षक बच्चों के साथ थोड़ी बातचीत करके उनके पूर्वज्ञान को सक्रिय करें।

शिक्षक विषय से संबंधित अपने अनुभव बच्चों के साथ साझा करें। इससे बच्चों को अपने अनुभव को व्यवस्थित रूप में आकार देकर दूसरों के साथ साझा करने में मदद मिलती है।

इसके बाद प्रत्येक बच्चे को अपने अनुभव कक्षा में सुनाने का अवसर दें। कोशिश करें कि सभी बच्चों को पूरी चर्चा के दौरान कम–से–कम एक बार बोलने का मौका अवश्य मिले।

ध्यान देने योग्य बातेंः चित्र पर चर्चा को सुचारु तरीके से चलाने के लिए, शिक्षक को इन गतिविधियों को क्रियान्वित करने के पहले थोड़ी तैयारी करनी होगी। जिस चित्र चार्ट को उपयोग में लेना है, उसे ध्यान से देखकर अपने प्रश्न तैयार रखना कारगर होगा और चर्चा को व्यवस्थित रूप से चलाने में मदद मिलेगी। ठीक इसी प्रकार, किस विषय के अनुभव पर चर्चा करनी है, यह कक्षा से पहले ही तय कर लेना उचित होगा।

कहानी पर कार्य एवं चर्चा की गतिविधियों से संबंधित लेखन कार्यः लेखन कार्य से संबंधित गतिविधियों पर चर्चा करने से लेखन कार्य क्या है एवं क्यों ज़रूरी है, इस पर बातचीत करना आवश्यक है। लिखने के बुनियादी कौशल (जैसे अक्षर–मात्राएँ जोड़कर शब्द लिखना) के साथ–साथ अपने शब्दों में अभिव्यक्ति और अर्थपूर्ण लेखन पर भी ध्यान देना आवश्यक है (जैसे मनोरंजन या अपने विचार / भावनाएं व्यक्त करने के लिए कुछ लिखना)।

इस आकृति में लेखन के बुनियादी कौशल और अपने शब्दों में अभिव्यक्ति या अर्थपूर्ण लेखन के बीच के संतुलन को दर्शाया गया है।

जब बच्चों के लिए शब्दों को सही रूप में लिखना स्वाभाविक हो जाता है, तब उनका अधिक से अधिक ध्यान अपने विचारों को सुंदर रूप से गढ़कर लिखने में लगता है। इसलिए प्राथमिक कक्षाओं में लेखन के बुनियादी कौशलों पर महारथ हासिल करना अत्यंत आवश्यक है, पर अर्थपूर्ण लेखन का काम बुनियादी कौशलों पर महारथ हासिल करने तक रोका नहीं जा सकता। बच्चों को शुरू से लेखन के द्वारा खुद को अभिव्यक्त करने के मौके भी मिलने चाहिए ताकि वे लेखन के कार्यों में रुचि लें और उसका महत्व समझें। आरंभिक वर्षों में लेखन चित्रों और आड़ी–तिरछी लकीरों का रूप लेता है, जिनके द्वारा बच्चे अपनी बात औरों तक पहुँचाते हैं।

कक्षा–1 में निम्नलिखित लेखन कार्य करवाए जाएँगे :

चित्र बनाना | **बच्चों द्वारा कही बातों को शब्द या वाक्य में लिखना** | **स्वतंत्र लेखन**

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H113, H114

चित्र बनाना: बच्चों को चित्र बनाने के मौके दें। चित्र बनाना भी अभिव्यक्ति का माध्यम है। इस दौरान बच्चों को ये न सुझाएँ कि चित्र कैसे बनाएँ, कौन–से रंग इस्तेमाल करें आदि। इन चित्रों का संबंध कहानी या पाठ से हो सकता है जो उस दिन उन्हें बताया/सुनाया गया हो। बच्चे जो कुछ भी बनाएँ, उन पर बातचीत करें। इस चरण के पहले 1–2 महीने बाद से इस तरह के लेखन कार्य के स्तर को आगे बढ़ाया जाएगा। इसके अंतर्गत बच्चों को कहानी पर कार्य एवं चर्चा की गतिविधियों से संबंधित लेखन कार्य करने को दिए जाएँगे। **उदाहरण:**

- सुनी हुई कहानी पर एक चित्र बनाओ और कुछ लिखो
- सुनी हुई कहानी में से अपने मनपसंद चरित्र का चित्र बनाओ और कुछ लिखो
- आज सुनी हुई कहानी में तुम्हें क्या अच्छा लगा, उस पर कुछ लिखने का प्रयास करो
- आज जिस चित्र पर चर्चा हुई, उसमें अगर तुम्हें कोई चित्र जोड़ना हो, तो तुम क्या जोड़ना चाहोगे, उसका चित्र बनाओ एवं कुछ लिखने का प्रयास करो
- आज जिस अनुभव के विषय पर चर्चा हुई, उस विषय पर एक चित्र बनाओ और अपने अनुभव को कुछ शब्दों या वाक्यों में लिखने का प्रयास करो

बच्चों द्वारा कही बातों को शब्द या वाक्य में लिखना: बच्चों द्वारा कही बात को शब्दों और वाक्यों में लिखना भी एक उपयोगी लेखन गतिविधि है। इससे बच्चों में यह संदेश जाता है कि हर कही जाने वाली बात लिखी भी जा सकती है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H113, H114

बच्चों द्वारा कही बातों को शब्द या वाक्य में लिखने के चरण:

शिक्षक बच्चों के साथ बातचीत के दौरान, उनके कहे शब्द/वाक्य बोर्ड पर लिखें। इन्हें पढ़कर सुनाएँ।

कहानी सुनाने के बाद बातचीत में बच्चों द्वारा बोले गए वाक्य बोर्ड पर लिखें। फिर पढ़कर सुनाएँ।

2–3 सप्ताह के बाद बच्चों के साथ मिलकर कोई छोटी कहानी/घटना को बोर्ड पर लिखें और उसे बच्चों को पढ़कर सुनाएँ। फिर बच्चों के साथ–साथ इसे पढ़ें।

स्वतंत्र लेखन: बच्चों को अपनी बात लिखने के लिए कुछ समय दें। इस दौरान वे जैसा चाहे लिख सकते हैं। वे शायद अच्छे से न लिख पाएँ, सिर्फ कोई लकीर, आकृति, वर्ण, ऐसा ही कुछ लिखें। आप बच्चों के साथ बैठें और उन्हें प्रोत्साहित करते रहें। लिखने के बाद उन्हें अपनी लिखावट साझा करने को कहें और इस पर बातचीत करें। बच्चों के लेखन कार्य को कक्षा में प्रदर्शित करें और एक निश्चित समय अंतराल के बाद इन्हें बदलें।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H113, H114

15. प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री की गतिविधियों की साप्ताहिक कार्य योजनाः सप्ताह 1–10

खंड	गतिविधि	पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	चौथा दिन	पाँचवाँ दिन	छठा दिन
मौखिक भाषा विकास एवं लेखन (40 मिनट)	**कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने की गतिविधियाँ (5–7 मिनट)**						
	• कविता	✓		✓		✓	
	• मौखिक खेल गतिविधि		✓		✓		✓
	पोस्टर पर कार्य (15–20 मिनट)						
	• कविता/कहानी पोस्टर पर कार्य				✓		
	कहानी पर कार्य (15–20 मिनट)						
	• शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना	✓					
	• शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना			✓			
	• बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना						✓
	चर्चा (15–20 मिनट)						
	• चित्र चार्ट पर चर्चा		✓				
	• अनुभवों पर चर्चा					✓	
	कहानी पर कार्य एवं चर्चा से संबंधित लेखन कार्य की गतिविधि प्रतिदिन 10–15 मिनट के लिए आवश्यक रूप से कराई जानी चाहिए।						

16. प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री पर आधारित दैनिक कार्य योजना का एक नमूनाः सप्ताह 1–10

पाँचवाँ दिन

मौखिक भाषा विकास की गतिविधियाँ	गतिविधियों को करने की प्रक्रिया
कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँः कविता गाना (5–7 मिनट)	• कविता पोस्टर 'चींटी' को बच्चों के साथ हाव–भाव एवं लय के साथ गाएँ। • कविता में आए मुख्य शब्द– 'चींटी दीदी', 'काली', 'भूरी' को बोर्ड पर लिखें एवं बच्चों के साथ हर शब्द पर उँगली रख कर पढ़ें। बच्चों का ध्यान बोले गए शब्द को देखने पर ले जाएँ। • फिर, बोर्ड पर लिखे हुए को मिटाएँ, अब 'चींटी दीदी', 'काली', 'भूरी' को बारी–बारी से बोलें एवं कुछ बच्चों को कविता पोस्टर में से इन शब्दों को खोजने को कहें।
अनुभव पर चर्चा (15–20 मिनट)	• कक्षा में मेले पर, बच्चों के अनुभव पर चर्चा करें। • सबसे पहले बच्चों को ऐसे आधे गोले में बिठाएँ, जिससे शिक्षक सभी बच्चों को देख सकें एवं सभी बच्चे भी एक–दूसरे को एवं शिक्षक को देख सकें। • सबसे पहले शिक्षक मेले में जाने के अपने अनुभव को साझा करें। इस दौरान यह याद रखें कि वाक्य छोटे–छोटे हों एवं सरल शब्दों का प्रयोग किया जाए। अपने अनुभव को 5–7 वाक्यों में बच्चों के साथ साझा करें। • इसके बाद बच्चों को 1–2 मिनट का समय दें ताकि बच्चे इस विषय पर अपने अनुभवों पर विचार कर सकें।

	• 4–5 बच्चों के 'मेले' से संबंधित अपने अनुभवों को कक्षा में साझा करने को कहें। यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक सप्ताह में सभी बच्चों को कम–से–कम 2 बार, चयनित विषयों पर अपने अनुभव साझा करने का मौके मिले।
अनुभव पर चर्चा से संबंधित लेखन कार्य (10–15 मिनट)	• अब बच्चों को 5–7 मिनट में अपने 'मेले' के अनुभव पर एक चित्र बनाने को कहें। बच्चों को अपने मन से चित्र से संबंधित कुछ शब्द लिखने के लिए प्रोत्साहित करें। • समय समाप्त होने पर कुछ बच्चों को अपना चित्र पूरी कक्षा के सामने दिखाने को कहें और यह भी बताने को कहें कि उन्होंने क्या बनाया एवं लिखा है। लेखन कार्य प्रत्येक दिन होना है, इसलिए शिक्षक का प्रयास यह रहना चाहिए कि एक सप्ताह में सभी बच्चों को अपने चित्र कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करने का एवं उस पर बोलने का मौका मिले। • आख़िर में, सभी बच्चों के लेखन कार्य को कक्षा में दीवार पर लगाएँ।

17. प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री से संबंधित गतिविधियों का विस्तृत विवरण: सप्ताह 11–16

पठन एक सरल प्रक्रिया नहीं है। बच्चों को इसे सीखने में वक़्त लगता है, क्योंकि पठन कई छोटे–बड़े कौशलों का समायोजन है। पठन में बच्चे कुशलता हासिल कर रहे हैं, यह तब पता चलेगा जब वे निम्नलिखित दो विशेषताएँ प्रदर्शित करने लगें:

- बच्चे प्रवाह के साथ पढ़ सकें।
- बच्चे जो कुछ पढ़ें, उसे समझ सकें।

एक कुशल पाठक के लिए उपर्युक्त दोनों क्षमताएँ ज़रूरी हैं। अगर बच्चे इन क्षमताओं को अच्छी तरह विकसित नहीं कर पाते हैं तो वे पढ़कर समझने में ख़ुद को असमर्थ महसूस करेंगे, जिससे वे पढ़ने और आगे सीखने के मौके से वंचित हो जाएँगे। जहाँ एक ओर बच्चों में कुशल पाठक की दक्षता विकसित करने की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर कक्षा में बच्चों को पढ़ने के मौके देने के साथ–साथ उत्साहपूर्ण वातावरण बनाने की भी आवश्यकता है।

सहज पर कार्य: 11वें सप्ताह से प्रतिदिन सहज पर कार्य किया जाएगा। पहले दो सप्ताहों में शब्द एवं सरल वाक्य पठन से संबंधित कार्य किया जाना है और 13वें सप्ताह से प्रत्येक सप्ताह में 3 पाठों पर कार्य किया जाएगा। एक पाठ पर दो दिनों तक कार्य होगा। इस पर कैसे कार्य किया जाना है, इस पर आगे चर्चा की जा रही है।

जब बच्चे बुनियादी डिकोडिंग कौशल सीखते हुए सरल शब्दों को पढ़ने लगते हैं तब उन्हें शिक्षक की मदद से छोटे–छोटे पाठ पढ़ने के लिए दिए जाने चाहिए। स्वतंत्र रूप से पढ़ने से पहले बच्चों को पढ़ने में मदद की आवश्यकता होती है। इसके लिए स्तरबद्ध सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है।

जब बच्चे वाक्य और छोटे–छोटे पाठ पढ़ने लगते हैं तो उन्हें पठनीय सामग्री पढ़ने के भी मौके मिलने चाहिए। ऐसी पठनीय सामग्री से बच्चों को पढ़ने की सटीकता और गति को मजबूती मिलती है।

सहज की मुख्य बातें

- इस पुस्तक में कुल 16 पाठ हैं। इसके अलावा शुरूआत में 3 पाठ शब्द, वाक्यांश एवं वाक्य पर पुनरावृत्ति के लिए हैं। इन पर सप्ताह 11 एवं 12 में कार्य किया जाना है।
- पाठ 1–16 में छोटी–छोटी कहानियाँ दी गई हैं। पाठ 1–3 में छोटे–छोटे पाठ एवं पाठ की विषय–वस्तु से संबंधित 1–1 चित्र दिए गए हैं। पाठ 4 एवं 5 में पाठों से संबंधित 2 चित्र दिए गए हैं। बाकी के पाठों के लिए 2 पृष्ठ उपयोग में लिए गए हैं जिनमें 4 चित्र हैं।
- प्रत्येक कहानी में छोटे–छोटे वाक्य हैं। हर कहानी 4–10 वाक्यों के बीच की है। शुरुआत के पाठों में थोड़े कम वाक्य हैं और बाद के पाठों में थोड़े ज़्यादा। व्याकरण के दृष्टिकोण से, वाक्यों की संरचना को सरल रखा गया है। इसके साथ–साथ सरल एवं स्थानीय या परिवेशीय शब्दों का उपयोग किया गया है।
- प्रत्येक कहानी में 1–2 घटनाएँ हैं जो संज्ञानात्मक रूप से सरल एवं परिवेशीय हैं।

सहज के पाठों को विकसित करते समय विभिन्न थीमों को आधार बनाया गया और फिर इन थीमों के इर्द–गिर्द ही कहानियों या घटनाओं को बुना गया। इनमें बच्चों द्वारा सीख लिए गए वर्णों/मात्राओं का इस्तेमाल प्रमुखता से किया गया है पर इसे किसी शर्त की तरह नहीं माना गया है। इन्हें बनाने में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि थीम ऐसी हो जो बच्चों के परिवेश और अनुभव से जुड़ती हो, जिसे कहानी की तरह विकसित किया जा सके और चित्रों द्वारा दर्शाया जा सके। इन्हें बच्चे शिक्षक की मदद से, चित्र और अनुमान के सहारे पढ़ेंगे। प्रत्येक पृष्ठ पर छोटे–छोटे वाक्यों के साथ चित्र होंगे। इन पाठों में ऐसे कई शब्द होंगे जिन्हें बच्चे पढ़ नहीं पाएँगे, पर विविध स्रोतों से शब्द को पहचानते होंगे। शब्द को पहचानने के कई स्रोत हो सकते हैं– चित्र के आधार पर अनुमान लगाना और संदर्भ से अनुमान लगाना आदि।

सहज पर कार्य करने के चरणः

पहला दिनः आदर्श वाचन

पहले दिन चित्र पर बातचीत (अनुमान), शिक्षक द्वारा आदर्श वाचन एवं अंत में पाठ से संबंधित संक्षिप्त बातचीत करना प्रस्तावित है। सभी बच्चों के साथ एक ही पाठ पर कार्य किया जाना है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H101-H106

पहले बच्चों को पाठ में दिए गए चित्रों को देखने के लिए कहें, फिर 1–2 मिनट बाद चित्रों से संबंधित बंद एवं खुले छोर के प्रश्न करें।

चित्रों पर बातचीत के बाद, शिक्षक द्वारा पाठ का आदर्श वाचन करना प्रस्तावित है। आदर्श वाचन के दौरान शिक्षक यह सुनिश्चित करें कि सभी बच्चे अपनी–अपनी किताबों में पढ़े जा रहे शब्दों/वाक्यों पर उँगली रखकर शिक्षक का अनुसरण कर रहे हों।

आदर्श वाचन की शुरुआत शीर्षक को पढ़कर करें। शिक्षक पूरी कहानी को हाव–भाव और आवाज़ में उतार–चढ़ाव के साथ सही गति से पढ़ें। एक पाठ का आदर्श वाचन शिक्षक द्वारा 2 बार किया जाना चाहिए।

अंत में, शिक्षक कहानी पर थोड़ी बातचीत करें।

दूसरा दिनः मार्गदर्शन में पठन

सहज–1 के किसी पाठ पर कार्य करने के दूसरे दिन शिक्षक के मार्गदर्शन में पठन अभ्यास किया जाना प्रस्तावित है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H101-H112

इस दिन की शुरुआत पाठ पर संक्षिप्त चर्चा से की जाएगी। पाठ पर बच्चों के पूर्व ज्ञान को सक्रिय किया जाएगा। इसके बाद, शिक्षक द्वारा पाठ का आदर्श वाचन किया जाएगा।

शिक्षक के आदर्श वाचन के उपरांत बच्चों द्वारा जोड़ों में पाठ को बारी–बारी से पढ़ा जाएगा। जब बच्चे जोड़ों में पढ़ रहें हों तब शिक्षक कुछ समय के लिए (5–7 मिनट) के लिए घूम–घूमकर अवलोकन करें और बच्चों को ज़रूरी मदद दें।

बाकी समय (10–15 मिनट) शिक्षक उन बच्चों के साथ काम करें जिन्हें पढ़ने में कठिनाई होती है। इन बच्चों की पहचान शिक्षक पहले से ही कर लें और इनको अपने मार्गदर्शन में पढ़ने को कहें और पढ़ने में उनकी मदद करें। बच्चों को हो रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए शिक्षक अपने स्तर पर योजना बनाएँ।

इसके बाद 5–7 मिनट में किन्हीं 2–3 बच्चों को पूरी कक्षा के सामने पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। उनके द्वारा पढ़ते समय हो रही गलतियों का संशोधन भी करें। परंतु यह ख़याल रखें कि इन बच्चों का मनोबल टूटना नहीं चाहिए। शिक्षक बच्चों द्वारा पढ़ने की कोशिश की सराहना करें एवं और पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

आख़िर में बच्चों को स्वतंत्र पठन के लिए 5–10 मिनट का समय दिया जाएगा। इस दौरान शिक्षक घूम–घूमकर अवलोकन करें और बच्चों को ज़रूरी मदद दें।

18. प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री की गतिविधियों की साप्ताहिक योजना एवं दैनिक कार्य योजना का नमूनाः सप्ताह 11–16

साप्ताहिक कार्य योजना

खंड	गतिविधि	पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	चौथा दिन	पाँचवाँ दिन	छठा दिन
		पाठ 1		पाठ 2		पाठ 3	
पठन (40 मिनट)	आदर्श वाचन	✓		✓		✓	
	मार्गदर्शन में पठन		✓		✓		✓

सहज–1 पर कार्य करने का एक नमूना (दूसरा दिन)

सहज	गतिविधि को करने की प्रक्रिया
दूसरा दिनः मार्गदर्शन में पठन (40 मिनट)	• शिक्षक द्वारा पाठ पर संक्षिप्त चर्चा की जाए जिससे बच्चों को कहानी याद आ जाए एवं वे गतिविधि से जुड़ पाएँ। • शिक्षक पाठ का एक बार आदर्श वाचन करें। अगर शिक्षक को ज़रूरत महसूस हो तो दुबारा भी पाठ का आदर्श वाचन कर सकतें हैं। • इसके बाद, बच्चों द्वारा में जोड़ों में पाठ को बारी–बारी से पढ़ा जाएगा। जब बच्चे जोड़ों में पढ़ रहें हो तब शिक्षक घूम–घूमकर अवलोकन करें और बच्चों को ज़रूरी मदद दें। • अगले 10–15 मिनट में शिक्षक उन बच्चों के साथ काम करें जिन्हें पढ़ने में कठिनाई होती है। • इसके बाद शिक्षक किन्हीं 2–3 बच्चों को पूरी कक्षा के सामने पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। • अंत में, बच्चों को स्वतंत्र पढ़ने के लिए 5–10 मिनट का समय दें। इस दौरान कक्षा में घूम–घूमकर अवलोकन करें और जिन बच्चों को मदद की ज़रूरत हो रही हो, उनकी सहायता करें।

पाठ / दक्षताएँ	H101	H102	H103	H104	H105	H106	H107	H108	H109	H110	H111	H112	H113	H114
पाठ–1 मेरा देश	✓		✓											
पाठ–2 बाग			✓	✓	✓									
पाठ–3 तालाब			✓	✓	✓									
पाठ–4 हुआ सवेरा	✓		✓											
पाठ–5 लिखने की तैयारी														
पाठ–6 वर्णमाला गीत						✓	✓	✓	✓				✓	
पाठ–7 पतंग	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓	
पाठ–8 रसोई	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓	
पाठ–9 बतख और चूजा	✓	✓	✓	✓	✓									
पाठ–10 सैर सपाटा	Maths													
पाठ–11 गिनो, बताओ														
पाठ–12 स्टेशन	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓	✓
पाठ–13 उड़े गुब्बारे	Maths													
पाठ–14 जया, जगत और जुगनू	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓	✓
पाठ–15 दादा जी	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓	✓
पाठ–16 इकाई व दहाई	Maths													
पाठ–17 लता की कक्षा														
पाठ–18 जाड़ा, गरमी और बरसात	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓	✓
पाठ–19 मापन	Maths													
पाठ–20 चंदा मामा	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓	✓	✓
पाठ–21 मीना की दुकान	Maths													
पाठ–22 जूही का जन्मदिन	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓				✓	✓

20. द्वितीय कालांश में कलरव–1 के पाठों पर कैसे कार्य करें?

कलरव–1 में निम्नलिखित गतिविधियाँ दी गई हैं:

कविता | कहानी | चित्र पर चर्चा | वर्ण/मात्राओं की पहचान एवं शब्द पठन

इन सभी गतिविधियों पर हम बारी–बारी से चर्चा करेंगे और समझेंगे कि इन पर चरणबद्ध तरीके से कैसे कार्य किया जा सकता है।

कविता पर कार्य

प्रत्येक कविता पर दो दिन कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इन दो दिनों में कविता पर कैसे कार्य किया जाएगा, इसका एक ढाँचा नीचे दिया गया है।

कलरव–1 की कविताओं से संबंधित पाठों पर कार्य करने के चरण:

पहला दिन	• चित्र को देखकर अनुमान लगाना– कविता किस बारे में हो सकती है? • शिक्षक द्वारा कविता का 2 बार हाव–भाव के साथ आदर्श वाचन किया जाना। • इसके बाद शिक्षक और बच्चों द्वारा साथ में कविता गाना। • बच्चों द्वारा स्वतंत्र रूप से कविता को हाव–भाव के साथ गाने का प्रयास। • आख़िर में, पाठ के अंत में दिए गए कुछ सरल अभ्यासों पर कार्य। उदाहरण– खाली स्थान भरो, विलोम शब्द, शब्दों को पूरा करो, चित्र बनाकर रंग भरो, पाठ के आधार पर सही वाक्य पर (✓) का निशान लगाओ आदि। **प्रत्येक गतिविधि पर पहले बच्चों से बात करें और उन्हें उदाहरण देकर समझाएँ। फिर लिखने को कहें।**
दूसरा दिन	• कविता पर आधारित सरल चर्चा: उदाहरण– कल हमने कौन–सी कविता पढ़ी थी? कविता किसके बारे में थी? ऐसी और कोई कविता सुनी हो तो सुनाओ। • शिक्षक द्वारा कविता का एक बार हाव–भाव के साथ आदर्श वाचन किया जाना। • एक–दो बार शिक्षक और बच्चों द्वारा साथ में कविता गाना। • फिर बच्चों द्वारा स्वतंत्र रूप से कविता को हाव–भाव के साथ गाया जाना। • आख़िर में पाठ के अंत में दिए गए प्रश्न–उत्तर पर मौखिक रूप से चर्चा करें और उन शब्दों की वर्तनी लिख दें जो बच्चों को ख़ुद से उत्तर लिखने में मदद करे।

कहानी पर कार्य

प्रत्येक कहानी पर तीन दिन कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इन तीन दिनों में कहानी पर कैसे कार्य किया जाएगा, इसका एक ढाँचा नीचे दिया गया है।

कलरव–1 की कहानियों से संबंधित पाठों पर कार्य करने के चरण:

पहला दिन	• पाठ में दिए गए चित्रों पर बच्चों द्वारा कहानी के बारे में अनुमान लगाने पर कार्यः उदाहरण– चित्रों में क्या दिख रहा है? इन चित्रों को देखकर क्या लग रहा है? कहानी किस पर है? इस कहानी में कौन–कौन (पात्र) होंगे? कहानी में क्या होगा? कहानी का नाम क्या हो सकता है? आदि। • फिर शिक्षक द्वारा पाठ का हाव–भाव के साथ पढ़कर या आदर्श वाचन किया जाएगा। • इसके बाद बच्चों के अनुमान पर बातचीत की जाएगी और शिक्षक द्वारा कहानी से संबंधित कुछ प्रश्न किए जाएँगे।
दूसरा दिन	• बच्चों से पहले दिन सुनाई गई कहानी पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे जाएँगे। • फिर शिक्षक द्वारा पाठ का हाव–भाव के साथ पढ़कर या आदर्श वाचन किया जाएगा। • पाठ के आधार पर विस्तृत चर्चा की जाएगी, उदाहरणः **पाठ 14– जया, जगत और जुगनू** विस्तृत चर्चा के उदाहरण के लिए कुछ प्रश्न • जया और जगत क्यों डर गए होंगे? उन्हें क्या लगा होगा? • अगर गाय की जगह भालू निकलता तो क्या होता? • तुम्हें सबसे ज़्यादा किस चीज़ से डर लगता है और क्यों? • तुम अपने दोस्तों के साथ क्या–क्या खेलते हो? • पाठ के अंत में दिए गए कुछ सरल अभ्यासों पर कार्य किया जाएगा।
तीसरा दिन	• बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाने को कहा जाएगा • कहानी से संबंधित और विस्तृत चर्चा की जाएगी। इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैंः ★ कहानी का अंत बदलकर फिर से सुनाओ ★ कहानी में एक नया पात्र जोड़ते हुए कहानी को आगे बढ़ाओ ★ दी हुई कहानी के अंत से नई कहानी की शुरुआत करो ★ दी गई कहानी में एक नई घटना जोड़ो ★ पहले सुनी हुई एक और कहानी को मिलाकर (घटना एवं पात्र) एक नई कहानी बनाना • ध्यान रहे कि प्रत्येक सप्ताह इन विस्तृत कहानियों के कार्य में परिवर्तन हो। • अंत में, पाठ के बाकी बचे अभ्यासों पर कार्य किया जाएगा।

चित्र पर चर्चा

कक्षा में चित्र पर चर्चा करने के चरणों पर हमने इसके पहले बात की है परंतु यह क्यों ज़रूरी है और इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों के संज्ञानात्मक कौशल में विकास एवं विस्तार कैसे होता है, चलिए इस पर हम थोड़ी बातचीत करते हैं। चित्र पर बातचीत करने के विविध स्तर हो सकते हैं, जो क्रमशः सरल यानी जो दिख रहा है, उनके नाम बताने से लेकर, कार्य–कारण संबंध बताने वाले, तर्क करने वाले और ख़ुद के अनुभवों से जोड़ने वाले हो सकते हैं। बातचीत के लिए बच्चों को अपनी भाषा के उपयोग के मौके मिलने चाहिए। स्थानीय भाषा और संदर्भ का इस्तेमाल ऐसी बातचीत के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षक की ओर से ऐसे प्रश्न रखे जाएँ कि बच्चों को चित्रों में अलग–अलग चीज़ों को खोजने, उस पर अपने अनुभव को बता पाने, तर्क कर पाने, घटनाओं पर अनुमान लगा पाने, एक घटना से दूसरी घटना के बीच संबंध बना पाने आदि के मौके मिल सकें।

चर्चा की शुरुआतः चर्चा की शुरुआत कुछ सामान्य बिंदुओं से करें। इसके लिए इस तरह के प्रश्न किए जा सकते हैं– ***चित्र में क्या–क्या दिख रहा है? यह चित्र कहाँ का हो सकता है? कौन क्या कर रहा है? इत्यादि।*** ऐसे सामान्य प्रश्नों के द्वारा कोशिश करें कि सभी बच्चे इस प्रक्रिया में जुड़ जाएँ और चर्चा शुरू हो जाए।

चित्रों को अनुभवों से जोड़नाः अब शिक्षक ऐसे प्रश्न कर सकते हैं जिससे बच्चे अपने परिवार और आस–पास होने वाली घटनाओं से अपने आप को जोड़ सकें। जैसेः **आपने इसे कब देखा है?, *क्या आपने किसी को ऐसे करते देखा है, आपके घर में यह कौन करता है? इत्यादि।***

विभिन्न अर्थ निर्माण से संबंधित प्रश्नः इसके अंतर्गत ऐसे प्रश्न पूछे जा सकते हैं जिसमें बच्चों को तर्क करने, कल्पना करने, अनुमान लगाने, इत्यादि के मौके मिले। जैसेः ***बिल्ली पेड़ के पीछे क्यों छिपी है? गिलहरी क्या सोच रही होगी? अगर यहाँ एक चूहा और एक कुत्ता भी होता, तो कौन क्या कर रहा होता? इत्यादि।***

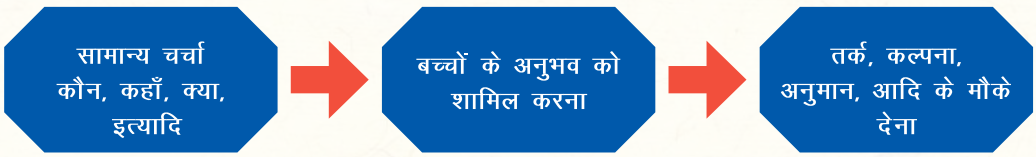

यह गतिविधि सबसे ज़्यादा इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक कैसे सभी बच्चों को चर्चा के लिए सहज और उत्सुक बनाते हैं। इसमें शिक्षक द्वारा स्थानीय भाषा का उपयोग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चित्र पर चर्चा करने के सामान्य चरण सहायक सामग्री से संबंधित गतिविधियों में दिए गए हैं। यहाँ हम चित्र पर बातचीत के लिए प्रस्तावित दो दिन की कार्य योजना को समझेंगेः

कलरव–1 की चित्र पर चर्चा से संबंधित पाठों पर कार्य करने के चरणः

पहला दिन	चित्रों पर शुरुआती बातचीत, बच्चों के अनुभवों को शामिल करना	• पहले सीधे और सरल प्रश्न। • अनुभवों को शामिल करने के लिए विभिन्न प्रश्न।
दूसरा दिन	चित्रों पर छोटे समूहों में चर्चा	• पहले दिन के चित्र संबंधित पाठ पर शिक्षक द्वारा बच्चों के साथ छोटी–सी चर्चा; (तर्क, कल्पना, अनुमान लगाने से संबंधित विभिन्न प्रश्न) करें। • फिर शिक्षक पूरी कक्षा को छोटे समूहों में बाँटें और उन्हें चित्र पर बातचीत करने को कहें। • शिक्षक समूहों में जाकर अवलोकन करें एवं हो रही चर्चाओं को आगे बढ़ाने में मदद करें।

ध्यान देने योग्य बातेंः जब हम मौखक भाषा विकास की गतिविधियों पर कार्य कर रहे हों, चाहे वो प्रथम कालांश हो या द्वितीय, शिक्षक इस बात का ख़याल रखें कि विभिन्न गतिविधियों के दौरान जब बच्चे बातचीत कर रहें हो तब उच्चारण संबंधित गलतियों को सुधारने से बचें। ऐसा इसलिए क्योंकि बातचीत के दौरान अगर उच्चारण सही करने पर बच्चों का ध्यान चला जाता है तो वे बोलने से हिचकने लगते हैं और कक्षा की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी कम होने लगती है।

वर्ण/मात्राओं की पहचान एवं शब्द पठन पर कैसे कार्य करें?

वर्ण/मात्राओं की पहचान एवं इन्हें जोड़कर (ब्लेंडिंग) शब्द पठन पर चरणबद्ध तरीके से कैसे कार्य किया जा सकता है, इससे संबंधित चर्चा नीचे दी गई है:

वर्ण पहचान पर कार्य:

उदाहरण– न वर्ण पर कार्य करने के चरण:

'नल' को बोर्ड पर लिखें और उसकी पहली आवाज़ के प्रतीक पर घेरा लगाएँ। फिर 'न' को अलग से बोर्ड पर लिख कर 3–4 बार उच्चारण करें।

बच्चों से 'न' की आवाज़ से शुरू होने वाले शब्द/नाम पूछकर बोर्ड पर लिखें। शब्द को तोड़कर पहली ध्वनि पर बल दें और बच्चों से /न/ पर गोला लगवाएँ।

बच्चों को 'न' वर्ण को कक्षा में प्रदर्शित सामग्रियों और कलरव–1 से ढूँढकर बताने को कहें।

अलग–अलग तरीकों से बच्चों द्वारा 'न' वर्ण के लेखन का अभ्यास (कॉपी और कार्यपुस्तिका–1 के पूर्व) करवाएँ। जैसे– अपनी उंगली से हवा में लिखो, ज़मीन/रेत पर लिखो, अपनी हथेली पर लिखो, हवा में कोहनी से या पैर से लिखो आदि।

अंत में कॉपी और कार्य कार्यपुस्तिका–1 में वर्ण के लेखन का अभ्यास करवाएँ।

मात्रा पहचान पर कार्य:

मात्रा सिखाने के चरण:

बोर्ड पर किसी वर्ण को लिखें और इसका उच्चारण करें। फिर उस वर्ण में लक्षित मात्रा लगाकर उच्चारण करें। उदाहरण– न ना

कुछ अन्य वर्ण लेकर उसमें लक्षित मात्रा लगाकर उच्चारण करें।
उदाहरण– क का, ल ला, प पा

सिखाए गए 5–7 वर्ण और लक्षित मात्रा से एक क्रमिक (sequence) ग्रिड बोर्ड पर बनाएँ और 4–5 बार उच्चारण करके दिखाएँ।

म	मा	ह	हा	त	ता
क	का	ज	जा	र	रा

इसी प्रकार से एक अनुक्रमिक (random) ग्रिड बोर्ड पर बनाएँ और बच्चों को वर्ण एवं अक्षर की पहचान करने को कहें। उदाहरण–

म	जा	का	बा	पा
हा	फ	त	न	ता
फा	ग	ब	र	मा
घ	घा	ह	रा	ना

अंत में, इससे संबंधित लेखन कार्य कॉपी या कार्यपुस्तिका–1 में करवाएँ।

वर्ण/अक्षर जोड़कर शब्द बनाने का कार्य:

वर्ण/अक्षर जोड़कर शब्द बनाने पर कार्य करने के चरण:

बोर्ड पर दो बॉक्स बनाएँ और उनमें वर्ण/अक्षर बोलते हुए लिखें। फिर, उसके सामने बड़े बॉक्स में इन दोनों वर्णों/अक्षरों से बने शब्द को लिखें। फिर पहले अलग–अलग उच्चारण करके, फिर इन्हें जोड़कर उपयुक्त गति से पढ़ें। जैसे–

बा	ल	बाल

फिर, दूसरे शब्द के साथ भी यही चरण करें। इन दोनों शब्दों को बच्चों के साथ ऊपर की तरह जोड़कर पढ़ें।

दो–तीन शब्द लें और उन्हें बोर्ड पर लिख दें फिर बच्चों को आपके साथ इन्हें पढ़ने को कहें।

कुछ बच्चों को इन शब्दों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने को कहें।

शब्द पठन पर कार्य:

शब्द पठन पर कार्य के चरण:

4–5 शब्दों को बोर्ड पर लिखें और इन्हें दो बार पढ़कर दिखाएँ। शब्द को सीधे–सीधे पढ़ें। जैसे– 'काम' इसे तोड़कर (का म) की तरह नहीं पढ़ें।

फिर बच्चों को इन्हें पढ़ने को कहें। आप बच्चों को जरुरत के अनुसार मदद करें।

अंत में कलरव–1 एवं कार्यपुस्तिका–1 में दिए गए शब्द पठन का अभ्यास करवाएँ।

ध्यान देने योग्य बातें:

- डिकोडिंग पर कार्य करने के दौरान बच्चों को अभ्यास के पर्याप्त मौके मिलने चाहिए। इससे संबंधित खेल गतिविधियाँ भी कराई जानी चाहिए।
- किसी सप्ताह एवं पहले सिखाए गए वर्ण/मात्रा की पुनरावृत्ति साप्ताहिक रूप से बच्चों के साथ कराई जानी चाहिए। इससे शिक्षक को पीछे छूटे हुए बच्चों के साथ निरंतर रूप के कार्य करने का मौका मिलता रहेगा। इसके लिए सप्ताह के छठे दिन को उपयोग में लाने की योजना प्रस्तावित है।

नोट: द्वितीय कालांश में इन पर सप्ताहवार वार्षिक योजना के अनुसार कार्य करें। तृतीय कालांश में कार्य पुस्तिका–1 को उपयोग में लाया जाना है। कार्य पुस्तिका–1, कलरव–1 से संबंधित है। अतः कार्य पुस्तिका–1 के अभ्यास कार्य पर कलरव–1 के गतिविधियों की कार्य–योजना (ऊपर दी गई) के अनुसार कार्य करें।

21. भाषा शिक्षण से संबंधित कुछ प्रमुख बातें

टाइम–ऑन–टास्क: जितने समय बच्चे शैक्षणिक गतिविधि में व्यस्त रहते हैं, हम कहते हैं कि वे 'टाइम–ऑन–टास्क' लगा रहे हैं। अतः जो गतिविधि कक्षा में कराई जा रही हो, उसमें यदि बच्चे जुड़े हों या व्यस्त हों – वे काम कर रहे हों, चाहे वह कैसा भी काम हो (सामूहिक दोहरान, लेख को उतारना ही क्यों न हो), वह टाइम–ऑन–टास्क कहलाता है। यह सबसे प्रभावी तब होता है जब कक्षा में कराई जाने वाली सभी गतिविधियों से बच्चे सक्रिय रूप से जुड़े हों। टाइम–ऑन–टास्क बच्चों से ज़्यादा शिक्षण की गतिविधि और तरीके पर निर्भर करता है।

स्कैफ़ोल्डिंग (Scaffolding) : स्कैफ़ोल्डिंग उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें किसी नई अवधारणा अथवा कौशल को सीखने में बच्चों को मदद दी जाती है। यह वह सहारा या मदद है जो शिक्षक द्वारा बच्चों को लगातार देनी होती है, जब वे कोई नया ज्ञान या कौशल सीख रहे हों। इसमें यह भी बहुत ज़रूरी है कि बच्चों का जो स्तर इस समय है, उससे कुछ ऊपर के स्तर की चुनौती बच्चों को दी जाए। यह मदद अध्यापक, किसी वयस्क अथवा अधिक सक्षम सहपाठी द्वारा बच्चों को उपलब्ध कराया जाने वाला एक अस्थायी मार्गदर्शन या सहयोग होता है। इस मार्गदर्शन अथवा सहयोग के बिना स्वतंत्र रूप से बच्चे उस काम को करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। यह मार्गदर्शन बच्चों की उन क्षमताओं को बढ़ाने के उद्देश्य से दिया जाता है, ताकि आगे जाकर बच्चा उस काम को स्वयं ही स्वतंत्र रूप से करने लगे।

सीखने की जिम्मेदारी क्रमशः सौंपना/जी.आर.आर. (Gradual Release of Responsibility): कक्षा में बच्चों को स्कैफ़ोल्डिंग देने का एक प्रभावी तरीका सीखने की ज़िम्मेदारी क्रमशः सौंपना अथवा जी.आर.आर. है। इसमें शिक्षक सीखने की ज़िम्मेदारी धीरे–धीरे बच्चों को सौंपता है। इस रणनीति के तहत चार मुख्य चरण होते हैं, जिसमें कक्षा में किए जाने वाले कामों को धीरे–धीरे तथा जान–बूझकर अध्यापक से हटाकर अध्यापक और बच्चों के बीच संयुक्त ज़िम्मेदारी की ओर फिर संयुक्त ज़िम्मेदारी से बच्चे द्वारा स्वतंत्र अभ्यास और उपयोग की ओर ले जाना होता है। ***यह रणनीति, इस अपेक्षा से कि "सारी ज़िम्मेदारी अध्यापक की है" से आगे बढ़कर "बच्चे सारी ज़िम्मेदारी ले रहे हैं" की स्थिति तक पहुँचती है।*** कक्षा में करवाई जाने वाली विभिन्न गतिविधियों में जिम्मेदारियों का हस्तांतरण क्रमशः किया जाना चाहिए जिसे नीचे दी गई आकृति से समझा जा सकता है:

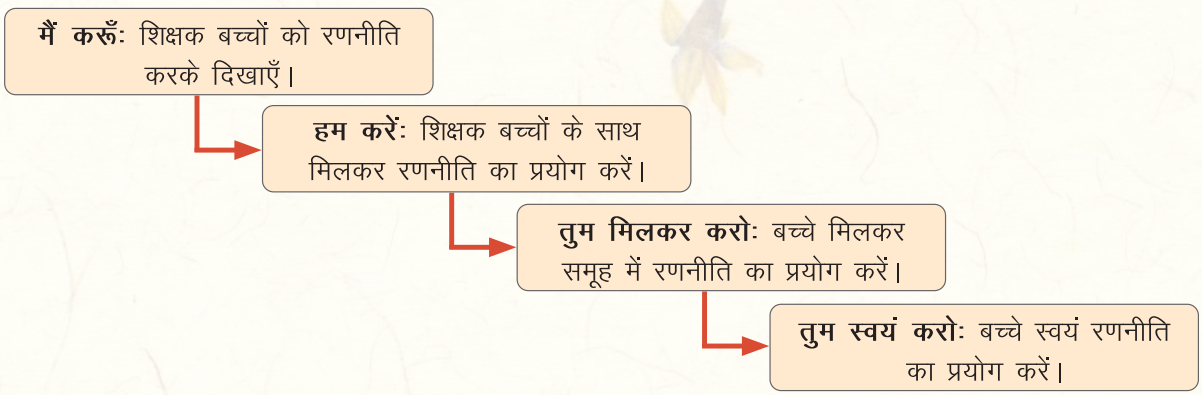

22. आकलन एवं पुनरावृत्ति

'आकलन' शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। इससे शिक्षकों को अपने छात्रों की प्रगति पर नज़र रखने और अपनी शिक्षण प्रक्रिया को बच्चों के वर्तमान स्तर के अनुरूप समायोजित करने में मदद मिलती है। आकलन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि बच्चों को सीखने में क्या कठिनाइयाँ हो रही हैं जिसके आधार पर उनकी जरूरतों के अनुसार शिक्षण पद्धति के प्रभावी तरीकों को उपयोग में लाते हुए शिक्षण रणनीति बनाई जाती है। इसलिए इसे *'सीखने के लिए आकलन'* भी कहा जाता है। इसके पीछे यह सिद्धांत है कि आकलन और शिक्षण को समग्र रूप से एकीकृत किया जाना चाहिए।

'सीखने के लिए आकलन' के लिए नियमित रूप से आकलन (सतत आकलन) किया जाना आवश्यक है। इसके लिए एक आवश्यक शर्त यह है कि सभी बच्चों को सीखने के लिए न्यूनतम समय एवं अभ्यास के मौके ज़रूर मिलें।

इस सिद्धांत के अनुसार, आकलन के द्वारा बच्चों की उपलब्धियों का पता लगाया जाता है एवं उनका विश्लेषण करके शिक्षक यह तय करते हैं कि उनकी कक्षा के कितने बच्चे लक्षित स्तर पर है और कितने नहीं। इसके पश्चात् आगे की रणनीति तय की जाती है। सबसे पहले शिक्षक यह तय करते हैं कि किन–किन बच्चों को सीखने में कहाँ दिक्कत आ रही है। इसके बाद शिक्षक इन बच्चों को अलग से समय देकर इनके साथ काम करते हैं। बहुत बार शिक्षक को इन बच्चों के साथ काम करने के लिए अपने शिक्षण पद्धति में बदलाव करना पड़ता है एवं नई–नई गतिविधियों को काम में लेना पड़ता है। अधिकतर देखा गया है कि शिक्षण पद्धति में थोड़े बदलाव के साथ कक्षा के सारे बच्चों तक पहुँचा जा सकता है और 'सभी का सीखना' सुनिश्चित किया जा सकता है।

आकलन के सिद्धांत पर हमने थोड़ी चर्चा कर ली है। आइए, अब यह समझने का प्रयास करते हैं कि शैक्षिक सत्र 2020–2021 में हमारी कक्षाओं में किस तरह के आकलन होने चाहिए एवं ये कब और कैसे किए जाएँ।

बच्चों द्वारा अर्जित दक्षताओं के आकलन की रूपरेखा

इस अकादमिक सत्र में दो तरह के आकलन होंगेः

साप्ताहिक आकलन **सावधिक आकलन**

साप्ताहिक आकलनः प्रत्येक सप्ताह के पाँचवे दिन अनौपचारिक रूप से आकलन किया जाना प्रस्तावित है। साप्ताहिक पुनरावृत्ति (सप्ताह के छठे दिन) का कार्य इसी आकलन पर आधारित होगा। यह कार्य (साप्ताहिक आकलन एवं पुनरावृत्ति) द्वितीय (कलरव–1) एवं तृतीय (कार्यपुस्तिका–1) कालांशों के दौरान किया जाना प्रस्तावित है।

इस आकलन का मुख्य उद्देश्य अभी तक बच्चों द्वारा सीखी गई विषयवस्तु को जानना और उन बच्चों की पहचान करना है जो उस विषयवस्तु के लिए निर्धारित कौशल हासिल नहीं कर पाए हों।

इसके लिए सप्ताह भर सिखाई गईं दक्षताओं की सूची बना लें और उनको आधार बनाकर आकलन करें। इसके लिए निम्नलिखित दक्षताओं को रखा जा सकता है :

विभिन्न घटकों पर सप्ताहवार आकलन															
विषयवस्तु / प्रश्न	सप्ताह														
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
चित्रों के नाम पहचानना		✓	✓	✓	✓										
किसी चित्र के बारे में शब्दों / वाक्यों (1–2) में अपनी बात रख पाना						✓	✓	✓	✓	✓					
सप्ताह (सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना के अनुसार) में सिखाएँ गए वर्णों को पहचानना			✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓
सप्ताह (सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना के अनुसार) में सिखाएँ गए मात्राओं / अक्षरों को पहचानना												✓	✓	✓	✓
दो वर्णों / अक्षरों वाले सरल शब्दों को पढ़ पाना						✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓
वर्णों / अक्षरों को सुनकर लिखना			✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓
दो वर्णों / अक्षरों वाले सरल शब्दों को सुनकर लिख पाना						✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓

शिक्षक इस आकलन के आधार पर अगले दिन (छठे दिन) आवश्यक दक्षताओं पर दुबारा कार्य करें। आकलन के विश्लेषण के आधार पर शिक्षकों को बच्चों के सीखने के कई स्तर मिलेंगे। आप इन्हें दो मुख्य समूहों में रख सकते हैं:

- पहला समूह, जिसमें ऐसे बच्चे होंगे जो निर्धारित दक्षताओं को प्राप्त कर चुके होंगे।
- दूसरा समूह, जिसमें वो बच्चे होंगे जिन्होंने अपेक्षित दक्षताएँ प्राप्त नहीं की होंगी और कुछ विषयवस्तु उन्हें दुबारा बताने की ज़रूरत है।

सावधिक आकलन: इस अकादमिक सत्र में कक्षा के स्तर पर 2 बार सावधिक आकलन किया जाएगा, पहला, सप्ताह 11 में और दूसरा, सप्ताह 16 में। इसे एक आंतरिक आकलन के रूप में देखा जाना चाहिए। इसका उद्देश्य शिक्षकों द्वारा आकलन किया जाना एवं उसके आधार पर बच्चों को कक्षा के स्तर पर एवं पीछे छूटे हुए बच्चों को मदद देना है।

भाषा शिक्षण के घटक	आकलन–1 (सप्ताह–11)	आकलन–2 (सप्ताह–16)
मौखिक भाषा विकास	• किसी परिचित विषय पर अपने अनुभव पर 1–2 वाक्यों में कह पाना • किसी चित्र को देखकर 1 वाक्य में अपनी बात कह पाना	• किसी चित्र को देखकर 1–2 वाक्यों में अपनी बात कह पाना
वर्ण पहचान	• सभी सिखाए गए वर्णों को पहचान पाना एवं सुनकर लिख पाना	• सभी सिखाए गए वर्णों को पहचान पाना एवं सुनकर लिख पाना
मात्रा पहचान	• सिखाए गए वर्णों/मात्राओं से बने अक्षरों की पहचान कर पाना	• सिखाए गए वर्णों/मात्राओं से बने अक्षरों की पहचान कर पाना
शब्द पठन	• बिना मात्रा वाले दो वर्णों से बने सरल शब्द पढ़ पाना– नल, जग, बस आदि	• शब्द पठन कर पाना (एक इकाई की तरह, न कि तोड़–तोड़कर) • मात्रा सहित दो वर्णों से बने शब्द पढ़ पाना (एक इकाई की तरह, न कि तोड़–तोड़कर)– दिन, काका, फूल
सरल पाठ पढ़ पाना	–	• दो–तीन सरल वाक्यों को पढ़ पाना (अधिकतम 12 शब्द)
लेखन	• किसी चित्र पर 1–2 शब्द लिख पाना	• किसी चित्र पर 2–3 शब्द लिख पाना

पुनरावृत्ति पर कार्य

इस अकादमिक सत्र में दो तरह की पुनरावृत्ति होंगीः

साप्ताहिक पुनरावृत्ति **सावधिक पुनरावृत्ति**

साप्ताहिक पुनरावृत्ति पर नियमित रूप से कार्य किया जाना चाहिए। इस पर छोटी–सी बातचीत पहले भी हुई है। प्रत्येक सप्ताह में भाषा कालांश–2 (कलरव–1 पर कार्य) एवं कालांश–3 (कार्यपुस्तिका–1 पर कार्य) के छठे दिन शिक्षकों को व्यवस्थित रूप से पुनरावृत्ति पर कार्य करना आवश्यक है।

- पुनरावृत्ति से संबंधित कार्य करने से पूर्व शिक्षकों को यह तय कर लेना आवश्यक है कि वे किन बच्चों के साथ कार्य करेंगे।
- अलग–अलग कारणों से कुछ बच्चे अपने सहपाठियों की अपेक्षा पढ़ने–लिखने में पीछे छूट जाते हैं। इस पुनरावृत्ति कालांश का उद्देश्य यह है कि इन बच्चों के साथ एक व्यवस्थित योजना के आधार पर कार्य किया जाना चाहिए जिससे कि इन्हें पढ़ने–लिखने में आ रही समस्याओं को दूर किया जा सके।
- जब शिक्षक पीछे छूटे हुए बच्चों के साथ कार्य कर रहे हों तब बाकी बच्चों को स्वतंत्र पठन, लेखन, कार्यपुस्तिका–1 में कार्य जैसी गतिविधियाँ देनी चाहिए ताकि किसी भी बच्चे का समय नष्ट न हो एवं शिक्षक को भी बच्चों के साथ छोटे समूह में कार्य करने में कोई परेशानी न हो।
- मौखिक भाषा विकास से संबंधित पुनरावृत्ति का कार्य किसी एक निर्धारित कालांश में करना संभव नहीं है और न ही लाभदायक। इस पर प्रत्येक दिन कार्य किया जाना चाहिए। जो बच्चे कम बोलते हों, उन्हें बोलने के अवसर दिए जाने चाहिए एवं इन्हें अपनी बातों को सबके सामने रखने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिए। सभी बच्चों पर शिक्षक की नज़र होनी चाहिए ताकि बच्चों में हो रहे मौखिक भाषा विकास को दैनिक रूप से नोट किया जा सके।

सावधिक पुनरावृत्ति

सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना के अनुसार सप्ताह–12 एवं 16 में अतिरिक्त पुनरावृत्ति अभ्यास से संबंधित कार्य पूरे सप्ताह चलेगा। यह पुनरावृत्ति कक्षा स्तर के सावधिक आकलन के आधार पर कराई जानी होगी।

- साप्ताहिक पुनरावृत्ति की तरह ही शिक्षकों को उन बच्चों के साथ व्यक्तिगत रूप एवं छोटे समूहों में कार्य करना चाहिए जो पीछे छूट रहे हों। जो बच्चे निर्धारित स्तर पर होंगे उन्हें 'कलरव–1 एवं सहज–1', पर पठन के कार्य दिए जा सकते हैं।
- इस सप्ताह में कॉपी एवं कार्यपुस्तिका–1 में कार्य दिए जा सकते हैं।

आकलन के बाद पुनरावृत्ति (साप्ताहिक एवं सावधिक) की प्रक्रिया

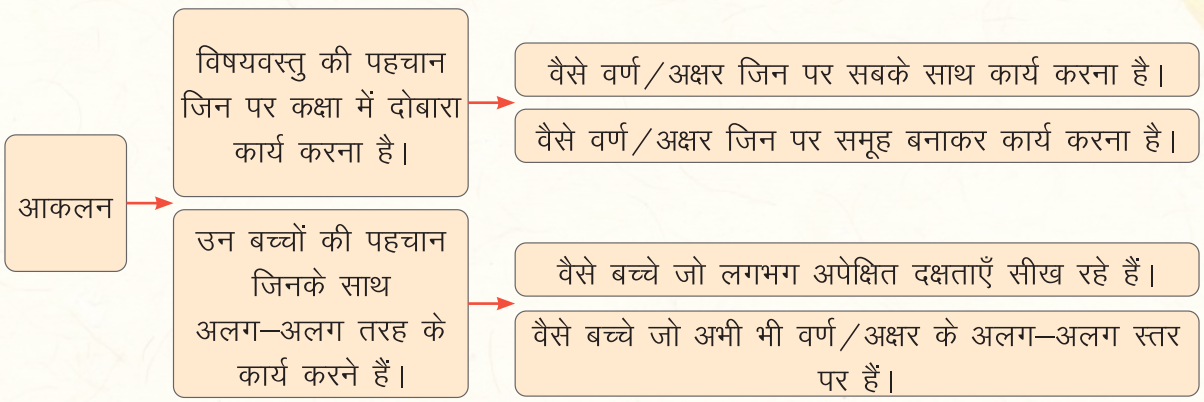

भाग 3

कक्षा–कक्ष से संबंधित महत्वपूर्ण पहलू

23. कक्षा प्रबंधन

कक्षा प्रबंधन एक विशेष प्रकार की रणनीति एवं तकनीक है जो सभी बच्चों को सक्रिय रूप से कक्षा में हो रही गतिविधियों से जोड़े रखती है। जब कक्षा–प्रबंधन की रणनीतियों को प्रभावी ढंग से निष्पादित किया जाता है, तो शिक्षक उन व्यवहारों को कम करने में सक्षम हो जाते हैं जो सीखने या सीखने की प्रक्रिया को बाधित करते हैं। इसके साथ–साथ प्रभावी कक्षा–प्रबंधन की रणनीतियाँ बच्चों के ऐसे व्यवहारों को बढ़ा देते हैं जो सीखने में मदद करते हैं।

कक्षा प्रबंधन की एक सीमित या पारंपरिक परिभाषा "अनुपालन" की ओर इंगित करती है जैसे छात्र अपनी सीट पर बैठे हों, दिशा–निर्देश सुन रहे हों, आदि। परंतु प्रभावी कक्षा प्रबंधन की सीमा इससे कहीं ज़्यादा होती है। प्रभावी कक्षा प्रबंधन वह सभी चीज़ें है जो सीखने में मदद करें, जैसे, शिक्षक का व्यवहार (बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और उनकी प्रतिक्रियाओं को कक्षा में स्थान देना), वास्तविक अपेक्षाएँ (बच्चों से अपेक्षित कार्य की जानकारी बच्चों के साथ साझा करना, आदर्श प्रस्तुतीकरण एवं मार्गदर्शन), शिक्षण सामग्री (सार्थक एवं विभिन्न शिक्षण सामग्री का उपयोग), गतिविधियाँ (सार्थक, विविध, स्तरानुसार, जोड़ों एवं समूह में कार्य) आदि।

प्रभावी कक्षा–कक्ष प्रबंधन से संबंधित कुछ सुझाव नीचे दिए गए हैं:

समय प्रबंधन

- बेहतर शिक्षण के लिए शिक्षक अलग–अलग शिक्षण विधि और गतिविधि काम में लेते हैं। गतिविधि में बच्चों के 'इन्तजार का समय' (wait time) व 'काम का समय' (time on task) कितना मिला है, यह एक महत्वपूर्ण मापदंड है, जिससे किसी भी गतिविधि की प्रारंभिक प्रभावकारिता का पता चलता है। 'इन्तजार का समय' (wait time) का अर्थ बच्चों को सोचने के लिए दिए जाने वाले समय से है। टाइम–ऑन–टास्क पर हमने पहले बात की है।
- बहुकक्षीय शिक्षण की स्थिति में समय का संतुलित उपयोग शिक्षक के लिए एक चुनौती है। शिक्षक को दूसरी कक्षा के लिए ऐसा कार्य देना चाहिए जिसे बच्चे स्वतंत्र रूप से या आपसी सहयोग से कर सकें। उन्हें शिक्षक के सहयोग की अधिक मदद की जरूरत नहीं पड़े।

बैठक व्यवस्था

- बैठक व्यवस्था कक्षा में हो रही गतिविधि के अनुरूप होनी चाहिए। सामूहिक कार्यों जैसे–कहानी सुनाने के समय बच्चे शिक्षक के नज़दीक गोल घेरे में या अर्द्ध वृत्ताकार रूप में बैठ सकते हैं। जबकि अन्य गतिविधियों के दौरान बच्चे कक्षा में फैलकर जोड़ों में, छोटे–छोटे समूहों में बैठ सकते हैं।
- बैठक व्यवस्था ऐसी हो जिसमें सामाजिक रूप से विविधिता वाले बच्चों को घुल–मिलकर बैठने के अवसर मिलें। लड़कियों को भी समान अवसर मिलें। जो बच्चे शर्मीले हैं या जो कक्षा में पीछे की तरफ बैठने की कोशिश करते हैं, शिक्षक उन्हें आगे बैठने के लिए प्रोत्साहित करें।
- हमारा प्रयास यह हो कि पहली कक्षा के बच्चे अलग ही बैठें ताकि शिक्षक अपनी भाषा शिक्षण–योजना को ठीक से लागू कर सकें। बहुकक्षीय शिक्षण की स्थिति में शिक्षक इस प्रकार से बैठक व्यवस्था करें कि दोनों कक्षाओं के बच्चे आराम से उचित दूरी बनाकर बैठ सकें। ऐसी बैठक व्यवस्था में शिक्षक को कक्षा–संचालन और समन्वयन में मदद मिलेगी।

भयमुक्त एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण

- भाषा के लिए नियुक्त और प्रशिक्षित शिक्षक ही भाषा का शिक्षण कार्य करें।
- यह आवश्यक है कि शिक्षक कक्षा में ऐसा भयमुक्त माहौल बनाएँ जहाँ बच्चे खुलकर सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें। बच्चे बिना झिझक और डर के शिक्षक से संवाद कर सकें। कक्षा व्यवस्था संबंधी नियमों को शिक्षक और बच्चे मिलकर तय करें।
- शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षक को बच्चों के साथ बराबरी का व्यवहार करने की कोशिश करनी चाहिए। अगर बच्चे दरी पर बैठे हैं तो शिक्षक भी उनके साथ दरी पर ही बैठें। ऐसा होने पर बच्चों को भावनात्मक रूप से शिक्षक से जुड़ने को मौका मिलता है और यह उनके सीखने में बहुत सहयोग करता है। शिक्षक बच्चों की उपलब्धियों की प्रशंसा करें एवं उन्हें बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- सभी बच्चों को शिक्षण कार्य के दौरान तय रणनीति के तौर पर जोड़ों में, समूहों में और व्यक्तिगत तौर पर काम करने के पर्याप्त मौके मिलने चाहिए।
- कक्षा–कक्ष लिखी और छपी हुई सामग्री से सुसज्जित होना चाहिए एवं इसको शिक्षण प्रक्रिया में उपयोग में लिया जाना चाहिए। सामग्री समय–समय पर बदलती रहनी चाहिए।
- बच्चों को अपनी घर की भाषा में संवाद के पर्याप्त मौके मिलने चाहिए।

सहयोगात्मक अधिगम (समूह कार्य)

- बच्चों को समूहों में बाँटने के दौरान इस बात का विशेष ख़याल रखना चाहिए की प्रत्येक समूह में विभिन्न अधिगम स्तर के बच्चे हों। ऐसा होने पर बच्चों को एक–दूसरे से सीखने में मदद मिलती है। इसके साथ–ही शिक्षक को भी कार्य संचालन में आसानी होती है।
- शिक्षक सभी तथाकथित 'कमज़ोर बच्चों' को एक समूह में रखकर एवं दूसरे समूह में 'तेज़ बच्चों' में बाँटकर कार्य कभी भी न सौंपे। ऐसा करने से अलग–अलग स्तरों के बच्चों के बीच में अलगाव की भावना उत्पन्न हो सकती है।
- कक्षा में इन समूहों की संख्या 5–6 तक की ही होनी चाहिए एवं हर समूह में 5–7 बच्चे हो सकते हैं। समूहों की संख्या ज़्यादा होने से शिक्षकों को बच्चों के कार्य का अवलोकन करने में और ज़रूरी मदद देने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। इसके साथ ही सभी बच्चों को गतिविधि में समान रूप से योगदान देने के पर्याप्त मौके नहीं मिल पाते हैं।

24. कक्षा में प्रिंट रिच (प्रिंट समृद्ध) वातावरण

बच्चों के लिए कक्षा को प्रिंट रिच बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। कई सामग्रियाँ प्रिंट रिच के लिए इस्तेमाल की जाती हैं: किताबें (बच्चों के स्तर की), पोस्टर, चार्ट्स, शिक्षक के द्वारा तैयार सामग्री, बच्चों के द्वारा बने चित्र, लेखन के नमूने, इत्यादि। शिक्षकों को कक्षा को प्रिंट रिच बनाने के लिए निम्नलिखित घटकों का ध्यान रखना चाहिए:

प्रिंट समृद्ध वातावरण के मुख्य घटक

क्रम	प्रिंट रिच के घटक	प्रिंट रिच सामग्रियों का कक्षा में उपयोग	व्यवस्था और सामग्री
1	रीडिंग कॉर्नर		बच्चों के स्तर की किताबों को कक्षा के किसी कोने में सजाकर इस तरह रखें कि बच्चे उसे लेकर देख सकें। इसके लिए विद्यालय में उपलब्ध किताबों का उपयोग करें। दीवार में रस्सी टाँगकर भी कुछ किताबों को रखा जा सकता है।
2	चित्र चार्ट		इनको कक्षा में इस तरह दीवारों और खिड़कियों के सहारे रखें कि यह सबको दिख जाए। इन्हें दीवारों से न चिपकाएँ क्योंकि चित्र पर चर्चा के लिए इन्हें बच्चों के बीच में रखना पड़ता है।
3	कविता पोस्टर / कहानी पोस्टर		मिशन प्रेरणा कार्यक्रम के तहत आपके विद्यालय में कविता और कहानियों के पोस्टर दिए जा रहे हैं। इन्हें दीवारों पर लगाएँ। ज़मीन से इनकी ऊँचाई ऐसी हो कि बच्चे आराम से पोस्टर देख पाएँ।

4	शब्द दीवार		दीवारों पर कई तरह के शब्द चार्ट लगाए जा सकते हैं: • बच्चों के नाम और उनके पसंद की चीज़ें • बच्चों के जन्मदिन का चार्ट • पढ़ाई गई कहानियों के नाम • कहानी और कविता • स्थानीय कविता और कहानी • बोलचाल के स्थानीय शब्द • कहानी/बातचीत/साझा पठन में आए शब्द • कोई चित्र और उसका वर्णन ऐसे चार्ट (नए शब्द, कहानियाँ, कविताएँ और चित्र) एक निश्चित समयांतराल (15 दिन/महीने में एक बार) पर बदलने चाहिए।
5	लेबलिंग (वस्तुओं के नाम)		कक्षा में मौजूद वस्तुओं के नाम काग़ज पर लिखकर प्रत्येक वस्तु के पास चिपकाए जा सकते हैं। जैसे– दरवाज़ा, खिड़की, अलमारी, टेबल, इत्यादि
6	बच्चों के चित्र और अन्य कार्य		बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों को दीवार पर प्रदर्शित करने के लिए एक निश्चित जगह चुनें। उस पर उनके चित्रों को नाम सहित चिपकाएँ। आगे चलकर बच्चे कुछ शब्द लिखते हैं तो उन्हें भी चिपकाया जा सकता है। बच्चों के इन कार्यों को समय–समय पर बदलते रहें।

भाग 4

मौखिक भाषा विकास से संबंधित गतिविधियों का संकलन

25. कविता, कहानी और मौखिक खेल गतिविधियों का संकलन

कविताएँ

ये बालगीत और कविताएँ अलग–अलग स्रोतों से ली गई हैं। हम उन सभी लेखकों/प्रकाशकों का आभार व्यक्त करते हैं जिनकी कविताएँ इस संग्रह में शामिल की गई हैं।

मुर्गी माँ

मुर्गी माँ घर से निकली,
झोला ले बाज़ार चली।
बच्चे बोले चें चें चें,
अम्मा हम भी साथ चलें।

– निरंकार देव सेवक

नन्हा खरगोश

छोटा–सा नन्हा खरगोश,
देखो, देखो, उसका जोश।
धूप तापता दौड़ लगाता,
फिर झट झाड़ी में घुस जाता।

तितली रानी

तितली रानी, तितली रानी,
तुम हो चंचल, बड़ी सयानी।
डाल–डाल पे झूमती हो,
फूल–फूल को चूमती हो,
इतनी मस्ती में मत आओ,
इन पंखों पर मत इतराओ।

हाथी

हाथी राजा बहुत भले
सूँड हिलाते कहाँ चले?
कान हिलाते कहाँ चले?
मेरे घर आ जाओ ना,
हलवा पूरी खाओ ना।

साभार : बिल्ली बोले म्याऊँ (एकलव्य)

अद्दक–बद्दक

अद्दक–बद्दक चंपा,
उसमें गला घंटा।
बारह बजे की छुट्टी में
बारह मिट्ठू बैठे थे।
एक मिट्ठू कच्चा,
वही रंग का पक्का।

साभार : बैठ घोड़ा पानी पी (एकलव्य)

कोयल रानी

कोयल रानी, कोयल रानी
कहाँ मिली यह मीठी बानी?
किसी नदी नें दावत में क्या
तुझे पिलाया शक्कर पानी?

– शंकुतला सिरोठिया

दो आलू

एक प्लेट में दो आलू
मोटू बोला मैं खा लूँ
खाते–खाते थक गया
रोटी लेकर भाग गया
रोटी गिर गई रेत में
मोटू रोया खेत में

साभार : एक दो दस (एकलव्य)

जादू की गठरी

जादू की एक गठरी लाऊँ,
बच्चों में बच्चा बन जाऊँ।
एक जेब से शेर निकालूँ
एक जेब से भालू।
दोनों को झटपट खा जाऊँ,
जादू की जो गठरी लाऊँ।

– दामोदर अग्रवाल

शेख चिल्ली

एक था शेख चिल्ली।
उसने पाली बिल्ली।
बिल्ली गई दिल्ली।
दिल्ली में थी किल्ली।
किल्ली ऊपर चढ़ गई बिल्ली।
सबने उड़ाई खिल्ली।

गप्पू जी

आलू की पकौड़ी, दही के बड़े,
मुन्नी की चुन्नी में तारे जड़े।
मूँग की मंगोड़ी, कलमी बड़े,
मंगू की छत पर दो बंदर लड़े।
खस्ता कचौड़ी, कांजी के बड़े
गप्पू जी फिसले तो औंधे पड़े।

चूहा

वह देखो, वह आता चूहा
आँखों को चमकाता चूहा,
मूँछों में मुस्काता चूहा,
लंबी पूँछ हिलाता चूहा,
मक्खन, रोटी खाता चूहा,
बिल्ली से डर जाता चूहा।

मामा मटरू

मामा मटरू जब भी आते,
सोते तो सोते ही जाते।
सोते तो सोते ही जाते।
जब भी उन्हें जगाना होता,
ढम–ढम ढोल बजाना होता।
ढम–ढम ढोल बजाना होता।

गुलगुला

छुट्टी हुई खेल की,
चढ़ी कढ़ाई तेल की।
सुर–सुर उठता बुलबुला,
छुन–छुन सिंकता गुलगुला।
भुलभुला और पुलपुला,
मीठा–मीठा गुलगुला।

पतंग

सर–सर–सर–सर उड़ी पतंग,
फर–फर–फर–फर उड़ी पतंग।
इसको काटा, उसको काटा,
खूब लगाया, सैर सपाटा,
अब लड़ने में जुटी पतंग।
अरे कट गई, लुटी पतंग!!

साभार : बिल्ली बोले म्याऊँ (एकलव्य)

रेलवे स्टेशन

छुक–छुक करती रेल चली।
शोर मचाती रेल चली।
इंजन धुआँ उड़ाता है,
सरपट दौड़ लगाता है।
कितने सारे लोग यहाँ,
इधर–उधर है भीड़ जमा।
कितने डिब्बे इधर खड़े,
कितने इंजन बड़े–बड़े।

चंदा मामा

चंदा मामा आएँगे
दूध बताशे लाएँगे
चिड़िया चावल लाएगी
दादी खीर पकाएगी
हम सब मिलकर खाएँगे
जब चंदा मामा आएँगे

साभार : एक दो दस (एकलव्य)

तारे

आसमान में निकले तारे,
चंदा मामा कितने प्यारे।
सबके मन को बहलाते हैं,
नई चाँदनी दिखलाते हैं।
आओ चंदा मामा आओ,
अपने घर की बात बताओ।
सबके मन को बहलाओ,
नई चाँदनी दिखलाओ।

सोमवार

आज सोमवार है
चूहे को बुखार है
चूहा हुआ उदास
पहुँचा डॉक्टर के पास
डॉक्टर ने लगा दी सुई
चूहा बोला–उई!

साभार : एक दो दस (एकलव्य)

बादल

बादल के जी में क्या आई,
सब की करने चला सफाई।
धो दिए पेड़, धो दी घास,
धो दिया सब कुछ आस और पास।
धुल गई पटरी, धुली दुकान,
सड़कों के तालाब बनाए,
बच्चे बूढ़े सभी नहाए।

एक चपाती

ताती ताती एक चपाती,
दिखी तवे पर पेट फुलाती।
बिल्ली मौसी बोली म्याऊँ,
भूख लगी मैं तुझको खाऊँ।
सुन कर उछली दूर चपाती,
बोली फिर आँखें मटकाती।
मौसी पहले मक्खन ला,
फिर चाहे मुझको खा जा।

– रमेश तैलंग

नानी कहे कहानी

चंदू की नानी
कहे कहानी,
एक था शरबत
एक था पानी
नानी पिए शरबत
चंदू पिए पानी,
रूठ गया चंदू
ख़त्म हुई कहानी।

साभार : बिल्ली बोले म्याऊँ (एकलव्य)

न्यौता

चूहे के घर न्यौता है
देखो क्या–क्या होता है
चिड़िया चावल लाएगी
बिल्ली खीर पकाएगी
बंदर पान बनाएगा
शेर मामा खाएगा
मुन्ना तू क्यों रोता है
तेरा भी तो न्यौता है

साभार : एक दो दस (एकलव्य)

मनीराम

इत्ते से मनीराम
इतनी लंबी मूँछ
सटक चले मनीराम
मटक चली मूँछ
जित्ते बड़े मनीराम
उनसे बड़ी मूँछ
लटक चले मनीराम
चटक चली मूँछ

साभार : एक दो दस (एकलव्य)

टब और भालू

टब में छिपने आया भालू,
किंतु नहीं छिप पाया भालू।
टब छोटा और भालू था मोटा,
राजू बहुत अधिक था खोटा।
उसने जाकर खोल दिया नल,
नल से निकल पड़ा शीतल जल।
जल में खूब नहाया भालू,
किन्तु डूब न पाया भालू।

कहानियाँ

रेडियो और चुहिया

एक भाई साहब रेडियो सुन रहे थे। उनके रेडियो में चुहिया घुस गई। चुहिया ने तार काट दिया इसलिए वह बज नहीं रहा था। भाई साहब दुकान पर सुधरवाने गए। दुकानदार ने रेडियो खोला तो उसमें से चुहिया निकलकर भागी।

भाई साहब कहने लगे, 'भैया बंद कर दे, भैया बंद कर दे।' दुकानदार बोला, 'ठीक तो हुआ ही नहीं है।' भाई साहब कहने लगे, 'अब क्या सुधरेगा। गाने वाली तो भाग गई।'

भालू का बच्चा और बाघ के बच्चे

भालू का बच्चा बगीचे में झूल रहा था। दो बाघ के बच्चे भी बगीचे में आ गए। ''हमें झूलने दो।'' बाघ के बच्चों ने कहा। ''इस पर झूल लो'' भालू के बच्चे ने दूसरे झूले की ओर इशारा करते हुए कहा। ''दिखता नहीं? हम दो हैं'' बाघ के बच्चे ने कहा। ''तुम दो हो तो बारी–बारी से झूलो'' भालू के बच्चे ने झूलते हुए कहा। बाघ के बच्चों ने ज़मीन से रेत उठाकर भालू के बच्चे के ऊपर उड़ेल दी।

भालू का बच्चा झूले से कूदा और पापा भालू को आवाज़ लगाई। बाघ के बच्चों ने देखा– सचमुच बड़ा भालू उधर खड़ा था। वे दोनों एक साथ भागे। गिरते–पड़ते दीवार कूदे। दीवार कूदते ही और ज़ोर से भागे। भालू का बच्चा दोनों झूलों पर बारी–बारी से झूलता रहा। झूलते हुए उसने सोचा– ''कहीं वे अपने मम्मी–पापा को बुला लाए तो? मैंने काफ़ी झूल लिया। दोनों झूलों पर अकेला कब तक झूलूँ।'' सोचते हुए वह भी वहाँ से चला गया।

साभार– प्रभात

बंदर और गिलहरी

एक बंदर पेड़ पर बैठा था। बंदर की पूँछ बहुत लंबी थी। इतनी लंबी थी कि ज़मीन तक लटक रही थी। एक गिलहरी ज़मीन पर उछल–कूद कर रही थी। अचानक उसे पूँछ दिखाई दी। उसने सोचा – 'यह झूला कहाँ से आ गया? थोड़ी देर पहले तो नहीं था।' वह पूँछ पर चढ़कर झूलने लगी। बंदर को गुदगुदी हुई। उसने नीचे देखा। वह हँसकर बोला – ''बहन गिलहरी! यह क्या कर रही हो? मुझे गुदगुदी हो रही है।'' गिलहरी चौंकी – ''बंदर भैया, यह तुम हो? मैं तो तुम्हारी पूँछ को झूला समझकर झूल रही थी। बड़ा मज़ा आ रहा था।'' उसके बाद गिलहरी हँसती हुई पेड़ की डाली पर चढ़ गई।

साभार– रिमझिम (एन.सी.ई.आर.टी)

सियार और ऊँट

सियार और ऊँट की पक्की दोस्ती थी। एक दिन दोनों फल खाने के लिए बगीचे में चुपचाप घुस गए। सियार का पेट जल्दी भर गया। पर ऊँट खाता रहा। तभी सियार ने कहा, ''मेरा हूँक लगाने का समय हो गया है।'' ऊँट ने मना किया पर सियार नहीं माना। हूँक सुनकर बगीचे के रखवाले आ गए। सियार तो भाग गया, पर ऊँट की खूब पिटाई हुई। कुछ दिनों बाद वे दोनों फिर मिले। सियार ऊँट की पीठ पर बैठा। दोनों ने नदी पार करना शुरू किया। बीच नदी में जाकर ऊँट बोला, ''मेरा डुबकी लगाने का मन कर रहा है।'' सियार ने मना किया। पर ऊँट ने नदी में डुबकी लगा दी। सियार नदी में कंडे जैसा बह गया।

साभार : लोक–कथा उत्तर प्रदेश के बृज क्षेत्र में प्रचलित है।

कछुआ और खरगोश

एक बार खरगोश ने कछुए को अपने साथ दौड़ लगाने को कहा। कछुए ने उसकी बात मान ली। दौड़ शुरू हुई। खरगोश तेज़ी से भागा। काफ़ी आगे जाने पर पीछे मुड़ कर देखा, कछुआ कहीं आता नज़र नहीं आया। उसने मन ही मन सोचा, ''कछुए को तो यहाँ तक आने में बहुत समय लगेगा, चलो थोड़ी देर आराम कर लेते हैं''। वह एक पेड़ के नीचे लेट गया। लेटे–लेटे कब उसकी आँख लग गयी, पता ही नहीं चला। उधर कछुआ धीरे–धीरे लगातार चलता रहा। खरगोश गहरी नींद में सो रहा था। इधर कछुआ पहुँच चुका था। अचानक, खरगोश की आँख खुली। खरगोश तेज़ी से भागा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। कछुआ दौड़ जीत गया।

लालची कुत्ता

एक बार एक कुत्ते को कई दिनों तक कुछ खाने को नहीं मिला। बेचारे को बहुत ज़ोर से भूख लगी थी। तभी किसी ने उसे एक रोटी दी। कुत्ता रोटी लेकर एक पुल पर चला गया। पुल के नीचे पानी बह रहा था। उसने नीचे देखा। उसकी नज़र पानी में पड़ी तो देखा कि एक कुत्ता पूरी रोटी मुँह में दबाए नीचे पानी में खड़ा है। उसे नहीं पता था कि वह उसकी ही परछाई है वह अपनी ही परछाई को दूसरा कुत्ता समझ रहा था।

कुत्ते ने सोचा, मैं यह रोटी भी इससे छीन लूँ तो भरपेट खा लूँगा। और वह रोटी छीनने के लिए पानी में दिखाई देने वाले उस कुत्ते पर भौंका। मुँह खोलते ही उसकी रोटी पानी में जा गिरी और बह गई। फिर तो उसे भूखे पेट ही सोना पड़ा।

भूखा बगुला

एक बगुला था। उसे भूख लगी थी। वह खाना खाने खेत में गया। खेत में उसे मूली मिली। मूली लेकर वह खाने लगा। तभी उसे तालाब दिखा। तालाब में मछलियाँ थी। उसने सोचा– ''मूली और मछली साथ खाए तो मज़ा आ जाए।'' वह मछली पकड़ने गया। तालाब में मगरमच्छ था। मगरमच्छ उसके पीछे दौड़ा। बगुला मूली लेकर भागा। बगुले को घड़ा दिखाई दिया। उसने मूली घड़े में डाली और भाग गया। घड़े में चूहे थे। चूहे मूली खा गए। बगुला लौटा तो देखा, घड़ा खाली था।

वह हँस दिया

हिरण का बच्चा दौड़ रहा था। खरगोश से आगे। हाथी से भी आगे। वह नाला कूद गया। पार कर गया। मैदान में पत्थर पड़ा था। ठोकर लगी तो गिर पड़ा। वह रोने लगा। बंदर ने पैर सहलाया। वह चुप न हुआ। भालू दादा ने गोद में उठाया। वह चुप न हुआ। माँ आई। बोलीं, ''लो, पत्थर को मार दिया।'' हिरण का बच्चा बोला, "इसे मत मारो। वरना यह भी रोने लगेगा।" माँ हँस दी। वह भी हँसने लगा।

साभार– प्रथम बुक्स

कौआ और लोमड़ी

एक बार एक कौए को एक रोटी मिली। एक लोमड़ी ने उसे देख लिया। लोमड़ी लालची थी। लोमड़ी ने सोचा, 'क्यों न मैं इस कौए को मूर्ख बनाकर रोटी ले लूँ।' वह कौए के पास गई। कौवा पेड़ पर बैठा था।

लोमड़ी बोली– भाई, तुम इतना अच्छा गाते हो! मुझे भी एक गाना सुनाओ।

कौआ अपनी तारीफ़ सुनकर खुश हो गया। वह गाने लगा। कौए ने जैसे ही गाने के लिए मुँह खोला, रोटी नीचे गिर गई। लोमड़ी रोटी लेकर भाग गई।

अनोखी दोस्ती

एक स्कूल में दो कुत्ते रहते थे। उनका जन्म वहीं कक्षा के पीछे हुआ था। स्कूल के बच्चों का भी उन दोनों कुत्तों के साथ काफ़ी लगाव था। बच्चों ने प्यार से एक का नाम कालू और दूसरे का नाम शेरू रखा था।

कालू और शेरू के साथ बच्चों की अच्छी दोस्ती हो गई थी। वे कुछ खाने को लाते तो कालू और शेरू को भी खिलाते। जब तक स्कूल लगा रहता, कालू और शेरू स्कूल में रहते। जब छुट्टी होती तो वे बच्चों के साथ उनके घर तक जाते।

एक बार स्कूल में दो बैल घुस आए। वे दिखने में लंबे चौड़े थे। वे स्कूल में लगे पेड़–पौधों को खाने लगे। शिक्षक और बच्चों ने उनको भगाने की कोशिश की। मगर वे उल्टा उन्हीं को मारने लपके। फिर कालू और शेरू दोनों बैलों पर ज़ोर–ज़ोर से भौंकने लगे। इससे बैल थोड़े घबराए। यह देखकर कालू और शेरू और ज़ोर–ज़ोर से भौंकने लगे। वे बुरी तरह बैलों के पीछे पड़ गए। इससे डरकर बैल स्कूल से बाहर चले गए।

साभार– अभया सिंह, मथुरा

मगरमच्छ

नदी के किनारे एक पेड़ था। उस पर चिड़िया रहती थी। पास में एक लड़का रहता था। दोनों दोस्त थे। वो साथ खेलते थे। नदी में एक मगरमच्छ रहता था। मगरमच्छ ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ खेलूँ"। दोनों ने मना कर दिया। मगरमच्छ नाराज़ हो गया। एक दिन मगरमच्छ ने लड़के का पैर पकड़ लिया। चिड़िया बोली– "इसे छोड़ दो।" मगरमच्छ बोला, "मुझसे दोस्ती करोगी?" दोनों ने मगरमच्छ की बात मान ली। अब तीनों दोस्त बन गए।

रोटी गई, रोटी आई

कमल के घर में एक कुत्ता था। उसका नाम था भौंकू। एक दिन कमल भौंकू को रोटी देने गया। तभी एक बंदर रोटी छीनकर भागा। वह छत की दीवार पर बैठ गया। एक कौए ने वह रोटी देखी! उसने बंदर से रोटी झपट ली! कौआ उड़कर आँगन के पीपल पर बैठ गया। उस पर एक मोर बैठा था।

उसकी नज़र रोटी पर पड़ी। कौआ रोटी बचाने झटपट उड़ा। नीचे से भौंकू ने शोर मचाया, "भौं–भौं–भौं–भौं!" कौआ घबरा गया। उसके मुँह से निकला, "काँव–काँव!" उसकी चोंच से रोटी छूट गई! वह आँगन में जाकर गिरी। भौंकू ने लपक कर उठा लिया। जिसकी रोटी थी, उसे मिल गई।

साभार– प्रथम बुक्स

दर्ज़ी और हाथी

एक समय की बात है। एक गाँव में एक दर्ज़ी रहता था। उसी गाँव में एक हाथी भी रहता था। वह दर्ज़ी की दुकान से होकर रोज़ नदी में नहाने के लिए जाया करता था। एक बार दर्ज़ी ने हाथी को एक केला खाने के लिए दिया। उस दिन से हाथी हर रोज़ दर्ज़ी की दुकान पर आता। दर्ज़ी उसे रोज़ कुछ ना कुछ खाने के लिए देता। वे आपस में पक्के मित्र बन चुके थे।

एक दिन दर्ज़ी ने हाथी के साथ मज़ाक़ करने की सोची। दर्ज़ी ने हाथी को केले के बजाय उसकी सूँड में सुई चुभा दी। हाथी को गुस्सा आया। वह वहाँ से नदी में नहाने चला गया। हाथी ने लौटते समय अपनी सूँड में खूब कीचड़ वाला पानी भर लिया। वह दर्ज़ी की दुकान पर आया। उसने सारा पानी दर्ज़ी और उसके कपड़ों पर छिडक़ दिया। अब दर्ज़ी के सारे कपड़े ख़राब हो चुके थे। दर्ज़ी अपने किए मज़ाक़ पर बहुत पछता रहा था।

मौखिक खेल गतिविधियाँ

1. ओला-ओला बम का गोला

सामग्री : कुछ नहीं

समय : 5–10 मिनट

इस खेल में बच्चे अलग अलग श्रेणियों के शब्दों का प्रयोग करते हैं।

★ सभी बच्चे एक गोल घेरे में बैठें। हर बच्चे का दायाँ हाथ दूसरे बच्चे के हाथ के ऊपर और बायाँ हाथ दूसरे बच्चे के हाथ के नीचे हो।

★ अब कोई एक बच्चा अपनी दायीं हथेली से दूसरे बच्चे की बायीं हथेली पर ताली मारते हुए बोले "ओला ओला"। दूसरा बच्चा तीसरे बच्चे की हथेली पर ताली मारते हुए बोले "बम का गोला।" तीसरा बच्चा चौथे बच्चे की हथेली पर ताली मारते हुए बोले "क्या बताऊँ?"

★ अब शिक्षक किसी एक श्रेणी की चीज़ों के नाम बताने को बोलें, जैसे– "फलों के नाम"।

★ बस फिर क्या! सभी बच्चे एक–दूसरे की हथेली पर ताली मारते हुए अलग–अलग फलों के नाम बताएँ और खेल को आगे बढ़ाएँ।

★ कोई बच्चा फल का नाम न बता पाए तो वह अपने से पहले वाले बच्चे के द्वारा बताए गए फल के बारे में एक वाक्य बोले।

★ फिर यह खेल दोबारा शुरू करें। इस बार किसी और चीज़ का नाम लें – जैसे सब्ज़ी, रंग, पशु–पक्षी इत्यादि।

2. क्या-क्या होता

सामग्री : कुछ नहीं

समय : 10 मिनट

इस खेल में बच्चे विभिन्न चीज़ों कि विशेषताएं, गुण आदि के बारे में सोचते हैं और उनसे जुड़े शब्द बताते हैं।

★ सभी बच्चे गोल घेरे में खड़े हों तथा रेलगाड़ी की तरह गोल घेरे में चलें। शिक्षक घेरे के अंदर ताली बजाते हुए चक्कर लगाएँ और बोलें –"क्या–क्या होता लाल–लाल?"। बच्चे शिक्षक के पीछे दोहराएँ" क्या–क्या होता लाल–लाल?"।

★ अब शिक्षक किसी भी एक बच्चे के सिर पर हाथ रख कर पूछें "बताओ! क्या–क्या होता लाल–लाल?"।

★ बच्चा किसी भी लाल चीज़ का नाम बताये, जैसे ' टमाटर ' और फिर टमाटर के बारे में कोई एक बात बताएँ।

★ इसी तरह फिर बच्चे रेलगाड़ी की तरह गोल घेरे में चलें और "क्या–क्या होता लाल–लाल?" पूछते हुए खेल आगे बढ़ाएँ।

★ इसी प्रकार अलग–अलग चीज़ों जैसे – आकृति (लंबा, गोल), स्वाद (खट्टा, मीठा), अथवा रंग (पीला, हरा) इत्यादि के साथ इस खेल को खेला जा सकता है।

3. मैं होता तो क्या करता?

सामग्री : कुछ जानवरों के नाम की पर्चियाँ/चित्र कार्ड **समय : 10–15 मिनट**

इस खेल में बच्चे जानवरों की जगह खुद को रखकर कुछ अनोखा सोचने का प्रयास करते हैं।

★ बच्चे गोल घेरे में बैठें। शिक्षक हर बच्चे को एक जानवर का नाम/चित्र कार्ड दें।

★ एक–एक करके बच्चों को आगे बुलाएँ। हर बच्चे को बताना है कि अगर वह यह जानवर होता तो क्या करता।

★ यहाँ ऐसी चीज़ें नहीं बता सकते जो आम तौर पर जानवर करते हैं। जैसे – "अगर मैं साँप होती, तो दूध पीती"। ऐसे जवाब की जगह बच्चों को कोई अनोखा जवाब सोचने के लिए प्रेरित करें। जैसे – "अगर मैं साँप होती, तो शेर के साथ दोस्ती करती और उसकी पीठ पर बैठ कर आराम से जंगल में घूमती।"

4. आओ, बाज़ार लगाएँ!

सामग्री : वस्तु, रंग, नकली नोट, मूल्य कार्ड **समय : 20 मिनट**

इस खेल में बच्चे बाज़ार संबंधित बातचीत करते हैं।

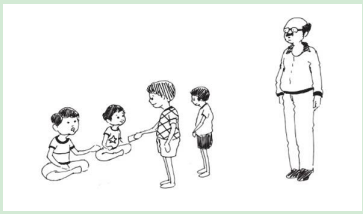

★ इस गतिविधि में कुछ बच्चे दुकानदार और कुछ बच्चे ख़रीददार बनेंगे। जो बच्चे दुकानदार हैं उनको वस्तुओं के मूल्य वाले कार्ड दें और ख़रीददार बने बच्चों को नकली नोट दें।

★ बच्चे अपने सामान को बेचने के लिए उसकी तारीफ़ करें और कुछ भी बोलकर ख़रीददार को आकर्षित करें और सामान को बेचें।

★ जैसे – यह मोबाइल बड़े काम की चीज़ है। इससे हम कहीं से भी बात कर सकते हैं। संदेश भेज सकते हैं। फ़ोटो खींच सकते हैं। खेल खेल सकते हैं। इसमें नाटक भी देख सकते हैं इत्यादि।

★ ख़रीददारी करने वाले बच्चों को विक्रेता से सवाल पूछने के लिए प्रेरित करें, जैसे – यह कितने रुपए का है? कौन – कौन से रंग में उपलब्ध हैं? हम यह वस्तु क्यों खरीदें इत्यादि। इस तरीके से उन्हें सामान की जाँच–पड़ताल करने और मोल–भाव करने के लिए प्रेरित करें।